वाट्सऐप @ 94140-78380, 92140-78380 | वर्ष :4 अंक : 197 | बुधवार 13 नवम्बर 2024 | दैनिक ई-पेपर

शाबाश इंडिया

@ShabaasIndia | प्लॉट नंबर 8, ओझा जी का बाग, गांधी नगर मोड, टोंक रोड, जयपुर

राजस्थान निवेश के लिए सबसे अनुकूल राज्य

निवेशकों को सभी सुविधाएं देने के लिए संकल्पबद्ध है राज्य सरकार: सूचना प्रौद्योगिकी और संचार मंत्री

राइजिंग राजस्थान 'आईटी एवं स्टार्टअप प्री-समिट' में 43 कंपनियों के साथ 6052 करोड़ के एमओयू पर हुए हस्ताक्षर। डिजिटल राजस्थान यात्रा को दिखाई झंडी, 145 स्टार्टअप को मिली 5 .65 करोड़ की फंडिंग

जयपुर. शाबाश इंडिया

सूचना प्रौद्योगिकी और संचार मंत्री कर्नल राज्यवर्धन राठौड़ ने कहा कि राजस्थान निवेश के लिए देश का सबसे अनुकूल राज्य है। प्रदेश सरकार अपने पहले ही वर्ष में राइजिंग राजस्थान ग्लोबल इन्वेस्टमेंट समिट का आयोजन करने जा रही है। राज्य सरकार का संकल्प है कि कंपनियों के साथ सिर्फ एमओयू नहीं किए जाएंगे, बल्कि उन्हें धरातल पर उतारकर राज्य का विकास सुनिश्चित किया जाएगा। कर्नल राठौड़ मंगलवार को 'राइजिंग राजस्थान' ग्लोबल इन्वेस्टमेंट समिट के संदर्भ में जयपुर स्थित होटल आईटीसी राजपूताना में 'आईटी और स्टार्टअप प्री-समिट' में बतौर मुख्य अतिथि अपना संबोधन दे रहे थे। सूचना प्रौद्योगिकी और संचार विभाग, विज्ञान और प्रौद्योगिकी विभाग और भारतीय उद्योग परिसंघ के तत्वावधान में आयोजित हुए इस प्री-समिट में तकनीक एवं नवाचार के क्षेत्र में 43 कंपनियों के साथ 6052 करोड़ के निवेश करारों (एमओयू) पर हस्ताक्षर किए गए। साथ ही डिजिटल राजस्थान यात्रा को झंडी दिखाकर रवाना किया गया तथा और 145 स्टार्टअप को दिए जाने वाले 5.65 करोड़ रुपए की फंडिंग के चेक की प्रतिकृति का अनावरण भी किया गया। मुख्य सत्र को संबोधित करते हुए कर्नल राठौड़ ने कहा कि सूचना प्रौद्योगिकी से कोई भी क्षेत्र अछूता नहीं है और इसमें निवेश की असीम संभावनाएं हैं। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में पिछले दस साल में भारत की छवि काफी बेहतर हुई है। उन्होंने कहा कि राइजिंग राजस्थान के संबंध में जिस भी देश की यात्रा की है, वहां से उन्हें काफी सकारात्मक प्रतिक्रिया मिली है। उन्होंने निवेशकों से राजस्थान के आईटी एवं नवाचार के क्षेत्र में निवेश करने की अपील करते हुए कहा कि राजस्थान ऐसा राज्य है, जो देश में रेलवे के मामले में दूसरे स्थान पर, सड़क नेटवर्क के मामले में तीसरे स्थान पर है और यहां वर्ष में 320 दिन खुला मौसम रहता है। साथ ही, रिन्यूएबल एनर्जी और पर्यटन के मामले में भी राज्य पहले स्थान पर है। इसी वजह से राजस्थान निवेशकों की पहली पसंद बन रहा है। सूचना प्रौद्योगिकी और संचार विभाग की शासन सचिव अर्चना सिंह ने प्री-समिट की भूमिका बताते हुए कहा कि विभाग राजस्थान के 'डिजिटल ट्रांसफॉर्मेशन' में अहम भूमिका निभा रहा है। उन्होंने विभाग के आईस्टार्ट, आरकेट एवं अटल इनोवेशन स्टूडियो जैसे नवाचारों की जानकारी देते हुए बताया कि विभाग नागरिक सेवाओं के संदर्भ में डेटा प्राइवेसी और सिक्योरिटी को सुनिश्चित करने के मामले में भी अग्रणी है। उन्होंने निवेशकों को सूचना प्रौद्योगिकी और नवाचार के क्षेत्र में निवेश के लिए आमंत्रित किया। इस अवसर पर सूचना प्रौद्योगिकी और संचार मंत्री कर्नल राज्यवर्धन राठौड़ ने डिजिटल राजस्थान यात्रा की वेबसाइट को लॉन्च किया और डिजिटल राजस्थान यात्रा 2024 को झंडी दिखाकर रवाना किया। यह यात्रा सूचना प्रौद्योगिकी विभाग और आईस्टार्ट के सहयोग से इंक42 की पहल है, जिसका उद्देश्य राजस्थान में आमजन और और स्थानीय व्यवसायों के जीवन पर इंटरनेट और प्रौद्योगिकी के असर को उजागर कर डिजिटल राजस्थान की छवि को प्रस्तुत करना है।

राजस्थान को आईटी और इनोवेशन हब बनाने पर मंथन

पहले सत्र में 'बिल्डिंग राजस्थान एज एन आईटी एंड इनोवेशन हब' विषय पर तकनीकी विशेषज्ञों ने विचार-विमर्श किया। डाटा इंजिनियर्स ग्लोबल लिमिटेड के सीईओ अजय डाटा ने सत्र का संचालन करते हुए कहा कि आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस बहुत तेजी से विकसित हो रही है। बीआईएसआर के ईडी प्रोफेसर पूर्णेंदु घोष ने कहा कि भारतीय विद्यार्थी प्रतिभा के धनी हैं। उन्हें उचित प्रोत्साहन दिए जाने की जरूरत है। थ्रिलोफिलिया की सह-संस्थापक चित्रा गुरनानी डागा ने भी स्टार्टअप की सफलता के लिए इकोसिस्टम और टेलेंट पूल को आवश्यक माना। मेटाक्यूब सॉफ्टवेयर के सह-संस्थापक श्री पारिजात अग्रवाल ने कहा कि तकनीकी जिस तरह स्वरूप ले रही है, उसे देखते हुए पारदर्शिता और विनियमन का महत्व बढ़ गया है। सेंटर फॉर एंटरटेनमेंट आर्ट्स के सह-संस्थापक दिवाकर गांधी ने आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के साथ एथिक्स को जोड़ने का सुझाव दिया। मुख्य सत्र में गिरनार सॉफ्टवेयर (कारदेखो) के सह-संस्थापक अनुराग जैन, प्रसार भारती के सीईओ गौरव द्विवेदी और एनवीडिया के निदेशक, दक्षिण एशिया गणेश महाबला ने भी उपस्थित जनसमूह को संबोधित किया।

6052 करोड़ के 43 एमओयू पर हुए हस्ताक्षर

मुख्य सत्र में सूचना प्रौद्योगिकी मंत्री कर्नल राज्यवर्धन राठौड़ की गरिमामयी उपस्थिति में तकनीकी एवं सूचना प्रौद्योगिकी क्षेत्र में 43 कंपनियों के साथ 6052.09 करोड़ रुपए के निवेश करारों (एमओयू) पर हस्ताक्षर कर उन्हें हस्तांतरित किया गया। राजस्थान में स्टार्टअप इकोसिस्टम को मजबूत करने के लिए वित्तीय, शैक्षणिक संस्थाओं और कॉर्पोरेट भागीदारों के साथ इन एमओयू पर हस्ताक्षर किए गए हैं। इन एमओयू से राजस्थान में तकनीक और नवाचार के क्षेत्र को नई ऊंचाई मिलेगी।

गुरु नानक जयंती विशेष

आज भी प्रासंगिक है गुरू नानक देव की दस शिक्षाएं

गुरू नानक सिखों के प्रथम गुरु हैं। इनके अनुयायी इन्हें गुरु नानक, गुरु नानक देव जी, बाबा नानक और नानकशाह नामों से संबोधित करते हैं। लद्दाख व तिब्बत में इन्हें नानक लामा भी कहा जाता है। गुरु नानक अपने व्यक्तित्व में दार्शनिक, योगी, गृहस्थ, धर्मसुधारक, समाजसुधारक, कवि, देशभक्त और विश्वबंधु - सभी के गुण समेटे हुए थे।

आरंभिक जीवन: इनका जन्म रावी नदी के किनारे स्थित तलवंडी नामक गाँव में कार्तिकी पूर्णिमा को हुआ था । कुछ विद्वान इनकी जन्मतिथि 15 अप्रैल, 1469 मानते हैं। किंतु प्रचलित तिथि कार्तिक पूर्णिमा ही है, जो अक्टूबर-नवंबर में दीवाली के १५ दिन बाद पड़ती है। इनके पिता का नाम कल्याणचंद या मेहता कालू जी था, माता का नाम तृप्ता देवी था। तलवंडी का नाम आगे चलकर नानक के नाम पर ननकाना पड़ गया। इनकी बहन का नाम नानकी था।बचपन से इनमें प्रखर बुद्धि के लक्षण दिखाई देने लगे थे। ७-८ साल की उम्र में स्कूल छूट गया क्योंकि भगवत्प्रापति के संबंध में इनके प्रश्नों के आगे अध्यापक ने हार मान ली तथा वे इन्हें ससम्मान घर छोड़ने आ गए। तत्पश्चात सारा समय वे आध्यात्मिक चिंतन और सत्संग में व्यतीत करने लगे। बचपन के समय में कई चमत्कारिक घटनाएं घटी जिन्हें देखकर गाँव के लोग इन्हें दिव्य व्यक्तित्व मानने लगे। उनका विवाह वर्ष 1487 में हुआ और उनके दो पुत्र भी हुए । गुरु नानक जी नें अपने मिशन की शुरूवात मरदाना के साथ मिल के किया। अपने इस सन्देश के साथ साथ उन्होंने कमजोर लोगों के मदद के लिए जोरदार प्रचार किया। इसके साथ उन्होंने जाती भेद, मूर्ति पूजा और छद्म धार्मिक विश्वासों के खिलाफ प्रचार किया। उन्होंने अपने सिद्धांतो और नियमों के प्रचार के लिए अपने घर तक को छोड़ दिया और एक सन्यासी के रूप में रहने लगे। उन्होंने हिन्दू और मुस्लमान दोनों धर्मों के विचारों को सम्मिलित करके एक नए धर्म की स्थापना की जो बाद में सिख धर्म के नाम से जाना गया। वे हिन्दू-मुस्लिम एकता के भारी समर्थक थे। धार्मिक सदभाव की स्थापना के लिए उन्होंने सभी तीर्थों की यात्रायें की और सभी धर्मों के लोगों को अपना शिष्य बनाया। उन्होंने हिन्दू धर्म और इस्लाम, दोनों की मूल एवं सर्वोत्तम शिक्षाओं को सम्मिश्रित करके एक नए धर्म की स्थापना की जिसके मिलाधर थे प्रेम और समानता। यही बाद में सिख धर्म कहलाया। भारत में अपने ज्ञान की ज्योति जलाने के बाद उन्होंने मक्का मदीना की यात्रा की और वहां के निवासी भी उनसे अत्यंत प्रभावित हुए। 25 वर्ष के भ्रमण के पश्चात नानक कर्तारपुर में बस गये और वहीं रहकर उपदेश देने लगे। उनकी वाणी आज भी 'गुरु ग्रंथ साहिब' में संगृहीत है। नानक जी यात्रा के लिए निकले तब उनके साथ उनके चार साथी मरदाना, लहना, बाला और रामदास भी उनके साथ यात्रा के लिए गये थे. इसके बाद 1521 ई० तक नानक जी ने तीन यात्राचक्र पूरे किए जिसमें भारत, अफगानिस्तान, फारस और अरब के मुख्य मुख्य स्थानों का भ्रमण किया. गुरू नानक जी की इन यात्राओं को पंजाबी में गुरु कहा जाता है। गुरु नानक साहिब का मानना था कि प्रत्येक व्यक्ति के समीप भगवान का निवास होता है इसलिए हमें धर्म, जाति, लिंग, राज्य के आधार पर एक दूसरे से भेदभाव नहीं करना चाहिए । उन्होंने बताया कि सेवा-अर्पण, कीर्तन, सत्संग और एक सर्वशक्तिमान परमेश्वर ही सिख धर्म की बुनियादी धारणाएं हैं। नानक जी ने समझाया- जिसका कोई नहीं होता उसका ईश्वर होता है, जो हमें जन्म दे सकता है वो पाल भी सकता है। किस बात का गुरुर? किस बात का घमंड? तुम्हारा कुछ नहीं है सब कुछ यहीं रह जायेगा, तुम खाली हाथ आये थे खाली हाथ ही जाओगे। अगर तुम दुनियाँ के लिए कुछ करके जाओगे तो मरकर भी लोगों के दिलों में जिन्दा रहोगे। गुरु नानक देव, जब, लगभग 5 वर्ष के हुए तब पिता ने एक मौलवी के पास पढ़ने के लिए भेजा मौलवी, उनके चेहरे का नूर देखकर हैरान रह गया जब उसने गुरु नानक देव जी की पट्टी पर ह्लऊँह्व लिखा, तब उसी क्षण उन्होंने ह्ल१ऊँह्व लिखकर संदेश दे दिया कि ईश्वर एक है और हम सब उस एक पिता की सन्तान हैं मौलवी, उनके पिता कालू जी के पास जा कर बोला कि उनका पुत्र तो एक अलाही नूर है , उसको वह क्या पढ़ाएगा, वह तो स्वयं समस्त संसार को ज्ञान देगा भविष्यवाणी सत्य सिद्ध हुई। परिवार का मोह उन्हें बाँध न सका जिस उद्देश्य के लिए उन्होंने अवतार लिया था, उसकी पूर्ति हेतु निकल पड़े घर से और साथ चले उनके दो साथी–पहला बाला और दूसरा मरदाना मरदाना मुस्लिम था गुरु नानक ने समाज को संदेश दिया कि जाति-पाति और सम्प्रदाय से अधिक महत्त्वपूर्ण होता है ''मानव का मानव से प्रेम'' क्योंकि एक पिता एकस के हम बारिक। एक आदर्श बन सामाजिक सद्भाव की मिसाल कायम की. उन्होंने लंगर की परंपरा चलाई, जहां अछूत लोग, जिनके सामीप्य से उच्च जाति के लोग बचने की कोशिश करते थे, ऊंची जाति वालों के साथ बैठकर एक पंक्ति में बैठकर भोजन करते थे. आज भी सभी गुरुद्वारों में गुरु जी द्वारा शुरू की गई यह लंगर परंपरा कायम है. लंगर में बिना किसी भेदभाव के संगत सेवा करती है. इस जातिगत वैमनस्य को खत्म करने के लिए गुरू जी ने संगत परंपरा शुरू की। नानक देव के पिता कालू ने सोचा कि उनके पुत्र के आध्यात्मिक तरीके उसको लापरवाह बना रहे है तो उन्होंने नानक को व्यापार के धंधे में लगा दिया नानक के व्यापारी बनकर कमाई के फायदे से भूखो को भोजन खिलाना शुरू कर दिया तभी से लंगर का इतिहास शुर हुआ था इससे पहले जब पहली बार नानक को व्यापार के लिए उनके पिता ने भेजा तो उनको 20 रुपए देकर इन पैसो से फायदा कमाने को कहा रास्ते में उनको साधुओ और गरीब लोगो का समूह मिला तो उन्होंने उन पैसो से उनके लिए भोजन और कपड़ो की व्यवस्था की नानक जब घर खाली हाथ लौटे तो उनके पिता ने उनको सजा दी पहली बार गुरु नानक देव ने निस्वार्थ सेवा को असली लाभ बताया इसी वजह से लंगर के मुलभुत सिधान्तो का उद्गम हुआ

दस सिद्धांत: गुरूनानक देव जी ने अपने अनुयायियों को जीवन के दस सिद्धांत दिए थे। यह सिद्धांत आज भी प्रासंगिक है। 1. ईश्वर एक है। 2. सदैव एक ही ईश्वर की उपासना करो। 3. जगत का कर्ता सब जगह और सब प्राणी मात्र में मौजूद है। 4. सर्वशक्तिमान ईश्वर की भक्ति करने वालों को किसी का भय नहीं रहता। 5. ईमानदारी से मेहनत करके उदरपूर्ति करना चाहिए। 6. बुरा कार्य करने के बारे में न सोचें और न किसी को सताएँ। 7. सदा प्रसन्न रहना चाहिए। ईश्वर से सदा अपने को क्षमाशीलता माँगना चाहिए। 8. मेहनत और ईमानदारी से कमाई करके उसमें से जरूरतमंद को भी कुछ देना चाहिए। 9. सभी स्त्री और पुरुष बराबर हैं। 10. भोजन शरीर को जिंदा रखने के लिए जरूरी है पर लोभ-लालच व संग्रहवृत्ति बुरी है।

प्रेरक प्रसंग

एक समय गुरु नानक देव और उनका चेला मरदाना अमीनाबाद गए. वहां पर एक गरीब किसान लालू नें उन्हें भोजन के लिए आमंत्रित किया. उसने यथा शक्ति रोटी और साग इन दोनों को भोजन के लिए दिए. तभी गाँव के अत्याचारी जमींदार मलिक भागु का सेवक वहां आया. उसने कहा मेरे मालिक नें आप को भोजन के लिए आमंत्रित किया है। बार-बार मिन्नत करने पर गुरु नानक लालू की रोटी साथ ले कर मलिक भागु के घर चले.मलिक भागु नें उनका आदर सत्कार किया. उनके भोजन के लिए उत्तम पकवान भी परोसे. लेकिन उससे रहा नहीं गया. उसने पूछा कि, आप मेरे निमंत्रण पर आने में संकोच क्यों कर रहे थे? उस गरीब किसान की सूखी रोटी में ऐसा क्या स्वाद है जो मेरे पकवान में नहीं. इस बात को को सुन कर गुरु नानक नें एक हाथ में लालू की रोटी ली और, दूसरे हाथ में मलिक भागु की रोटी ली, और दोनों को दबाया. उसी वक्त लालू की रोटी से दूध की धार बहने लगी, जब की मलिक भागु की रोटी से रक्त की धार बह निकली। गुरु नानक देव बोले- भाई लालू के घर की सूखी रोटी में प्रेम और ईमानदारी मिली हुई है. तुम्हारा धन अप्रमाणिकता से कमाया हुआ है, इसमें मासूम लोगों का रक्त सना हुआ है. जिसका यह प्रमाण है। इसी कारण मैंने लालू के घर भोजन करना पसंद किया। यह सब देख कर मलिक भागु उनके पैरों में गिर गया और, बुरे कर्म त्याग कर अच्छा इन्सान बन गया।

संकलनकर्ता
कवि व लेखक नवीन जैन नव बीगोद

जीवन में तकलीफ आए तो तप से जुड़ जाओः युवाचार्य महेंद्र ऋषि जी म.

एएमकेएम में आठ वार की प्रवचनमाला

चैन्नई. शाबाश इंडिया

एएमकेएम जैन मेमोरियल सेंटर में चातुमार्सार्थ विराजित श्रमण संघीय युवाचार्य महेंद्र ऋषिजी महाराज ने सात वार की प्रवचनमाला की श्रृंखला में कहा कि वारों का महत्व हमारे जीवन में रहा है, चाहे वह सात वार हो या आठवां वार। आप जब भी कोई कार्य करोगे तो वार का जरुर सोचोगे। चाहे सुख का प्रसंग हो या दुःख का, वार के बारे में सोचोगे। हमारे जीवन में वार की चर्चा होती रहती है। उन्होंने शनिवार की चर्चा करते हुए कहा कि शनि शब्द सुनते ही हमारे बाल खड़े हो जाते हैं, दिमाग की बत्ती तेज हो जाती है। यदि जीवन में किसी को भी कोई समस्या है तो शनि का ध्यान आता है। शनि उग्र कहलाता है। यह दुःखों की आग लगाता है। यह हमें धीर-गंभीर बनाता है। यह दृढ़ता बढ़ाने वाला है। शनि के नाम से लोग थरार्ने लग जाते हैं लेकिन यह हमारे जीवन में महत्वपूर्ण स्थान रखता है। यह हमारी शक्ति का दिग्दर्शन, साक्षात्कार कराता है। उन्होंने कहा यह हमारे धैर्य की परीक्षा भी लेता है और हमें मजबूत बनाने का कार्य भी करता है। आटा और सब्जी को जब तक आंच नहीं लगती, वे पाचन के योग्य नहीं होते। घर में समस्या यही है कि लाड़ प्यार तो मिलता है लेकिन तपन मिलती ही नहीं। नेचुरोपैथी में तेल, घी नहीं देते लेकिन उसको उबालेंगे जरुर। तपना जरूरी है, ऐसे तो कोई तपता नहीं है। तपन के बिना कोई परिपक्व नहीं होता। परिपक्व यानी चारों ओर से पक्का, तैयार। उग्रता ही तपाती भी है। यदि नहीं तपे तो हमारे भीतर रही हुई शक्ति सही दिशा में आगे नहीं बढ़ती। सोने को आग में तपाने से ही आभूषण बनते हैं। जब आंच लगेगी तो वह पिघलेगा और उसे मोल्ड कर सुंदर बनाने की क्षमता आएगी। इसलिए शनि को बुरा न मानो। उसे बुरा मानकर हम लोगों ने कमजोर बना दिया है। वह तो हमें मजबूत बनाने के लिए आया है। उन्होंने कहा शनि हमें गलत रास्ते पर जाने से रोकता है। वह भीतर में हमारी शक्ति को बढ़ाता है। शनि अपने आप में सोचने का समय देता है। गाड़ी न्यूट्रल में ही सही खड़ी रह सकती है। न्यूट्रल शनि सोचने की, गंभीरता की शक्ति देने वाला है। यह हमें धीरज देने वाला है, सामर्थ्य देने वाला है। इस शनि को अनुकूल बनाने के लिए अनुभवियों ने कहा है कि हमें साधना के रूप में प्रतिपूर्ण या काया क्लेश तप करना है। यदि किसी ने शनि का उपाय बताया तो वह करना ही है लेकिन काया क्लेश, तप भी करना चाहिए। आज लोग यह करने को तैयार नहीं है। उन्होंने कहा काया क्लेश शरीर को तपाता है। जब भी जीवन में तकलीफ आए तो तप से जुड़ जाओ। जहां आप शरीर को थोड़ा कष्ट दोगे, वहां हमारी समस्या का समाधान हो सकता है। अगर ऐसी स्थिति आए तो ध्यान रखना, किसी प्रकार का डर, घबराहट नहीं रखते हुए अवसर का सदुपयोग करें। यदि हम ध्यान रखेंगे तो हमारा जीवन आनंदमय, मंगलमय हो सकता है। वारों के पीछे रहे हुए रहस्य के दृष्टिकोण का अनुसरण करें। अरिहंत परमात्मा के बालक होकर हमें धीरज नहीं खोना है। महिला महासंघ के सदस्यों का आज स्वागत सम्मान किया गया। मंत्री धमीचंद सिंघवी ने कहा कि इस चातुर्मास में पहली बार महिला महासंघ का गठन हुआ ओर उनकी सेवाएं अत्यंत सराहनीय रही। कमल छल्लानी ने सभा का संचालन किया।

-प्रवक्ता सुनिल चपलोत

उपाध्याय वृषभा नन्द जी मुनिराज ससंघ को जनकपुरी जैन समाज ने प्रवास हेतु किया श्रीफल भेंट

जयपुर. शाबाश इंडिया

जनकपुरी ज्योतिनगर जैन समाज ने थडी मार्केट मानसरोवर में प्रवासरत आचार्य श्री 108 वसु नन्दी जी महामुनिराज के वरिष्ठ शिष्य उपाध्याय वृषभा नन्द जी ससंघ को प्रवास हेतु मन्दिर प्रबंध समिति व गणमान्य समाज जन ने श्रीफल भेंट कर निवेदन किया। प्रबंध समिति अध्यक्ष पदम जैन बिलाला ने बताया कि संघ का बीस नवम्बर से प्रवास संभावित है। प्रवास के दौरान आचार्य वसु नंदी जी द्वारा लिखित 1008 छन्द व मन्त्र युक्त वृहत पाँच दिवसीय सहस्र नाम विधान जनकपुरी के स्वर्ण आभा युक्त सहस्र कूट जिनालय में स्थित 1008 जिन प्रतिमाओं के समक्ष साज बाज व भक्ति भाव के साथ किया जाना है। यह विधान जनकपुरी में प्रथम बार ही किया जायेगा। इस समय राजेश गंगवाल , प्रकाश गंगवाल, देवेंद्र कासलीवाल , ज्ञान चंद भौंच, सौभाग अजमेरा, महेश काला, राजेंद्र ठोलिया, प्रदीप चाँदवाड़, दिलीप चाँदवाड़ सहित समाज के गणमान्य सदस्य उपस्थित रहे ।

वेद ज्ञान

वास्तविक स्वर्ग

पूरी सृष्टि में ऐसा कुछ भी नहीं जो स्थाई हो। जड़-पदार्थों का अस्तित्व बनता-बिगड़ता रहता है। तब जीव भी कुछ काल तक अस्तित्व में रहकर समाप्त हो जाता है। जीवों में एकमात्र मनुष्य ही है, जो स्वर्ग-नर्क की धारणाओं से बंधा हुआ है। धर्मग्रंथों से लेकर सत्संगों तक में यह कहा जाता है कि अच्छे काम करने चाहिए ताकि स्वर्ग मिले, बुरे काम करने पर नर्क मिलता है। यहीं यह विषय बहस का मुद्दा बन जाता है कि किसने स्वर्ग-नर्क देखा है। इस धारणा के मानने वाले भी सिर्फ यही कहते हैं कि अनेक ग्रंथों में इसका उल्लेख है। मृत्यु के बाद क्या होता है, किसके साथ क्या होता है, यह आस्था पर ही निर्भर है, लेकिन यदि गहराई से मनन किया जाए तो स्वर्ग-नर्क धरती पर ही दिख जाएगा। स्वर्ग व नर्क को मृत्यु के दिन ही नहीं, बल्कि हर घड़ी इसे देखा जा सकता है। प्रथमदृष्टया स्वर्ग-नर्क को क्रमशः सकारात्मकता और नकारात्मकता की छाया प्रति मान कर चिंतन करना चाहिए। जब व्यक्ति सकारात्मक कार्य करता है, तब उसे प्रसन्नता होती है, बस यही स्वर्ग है। स्वर्ग का जीवन आनंददायी बताया गया है। जहां आनंद वहां परमानंद स्वरूप नारायण मौजूद हैं, जबकि नकारात्मक जीवन से भय, ग्लानि, चिंता मन में आती है। हर पल अज्ञात भय बेचैन किए रहता है। ऐसा इसलिए, क्योंकि नकारात्मक कार्य करने पर दुनिया भले न जाने व्यक्ति का मन तो किए गए नकारात्मक कार्य को जानता है। फिर उसका पर्दाफाश कहीं न हो जाए, इसको लेकर संशय और तनाव बना रहता है। नींद गायब हो जाती है। यदि भय, तनाव से भूख और नींद गायब हो जाए तो फिर जीवन का एक बड़ा सुख गायब हो जाता है। इस संबंध में अकबर-बीरबल की एक कथा समीचीन है कि जब अकबर ने बीरबल से पूछा कि कैसे जान लेते हो कि कोई मरता है तो वह स्वर्ग गया या नर्क गया। बीरबल ने कहा कि जब कोई मरता है और उसके इलाके में लोग मृतक के मरने से अंदर से दुखी दिखते हैं और बोलते हैं कि जब तक जीया लोगों की मदद की, तब जान लेते हैं कि वह स्वर्ग गया और जब मरने वाले की निंदा के साथ उसके कर्मों को कोसते हैं, तब मान लेता हूं कि नर्क गया। यह कहना कि मृत्यु के बाद स्वर्ग-नर्क का निर्धारण होगा, यह व्यक्ति को शिक्षा देने के लिए ग्रंथों में कहा गया है।

संपादकीय

प्रदूषण पर सर्वोच्च न्यायालय का स्वागतयोग्य संदेश

सर्वोच्च न्यायालय ने फिर प्रदूषण को निशाने पर लेकर एक अनुकरणीय और स्वागतयोग्य संदेश दिया है। दीपावली के कुछ दिन पहले से ही राष्ट्रीय राजधानी सहित देश के एक बड़े इलाके में वायु प्रदूषण से बहुत बुरा हाल है। क्या प्रदूषण के लिए केवल दीपावली में होने वाली आतिशबाजी को जिम्मेदार मान लिया जाए ? लगभग यही सवाल सर्वोच्च न्यायालय ने भी किया है। न्यायालय ने सोमवार को दोटूक कहा है कि कोई भी धर्म ऐसी

किसी गतिविधि को प्रोत्साहित नहीं करता, जिससे वायु प्रदूषण हो सकता है। साथ ही, न्यायालय ने दिसरकार को 25 नवंबर तक राष्ट्रीय राजधानी में पटाखा प्रतिबंध लगाए रखने का निर्देश दिया है। बड़े अफसोस की बात है कि दिल्ली की वायु गुणवत्ता सोमवार को लगातार 13वें दिन ह्यबहुत खराबह्न श्रेणी में रही। प्रदूषक तत्व मानों शहर में ठहर से गए हैं। ऐसे में, लोगों को स्वास्थ्य के मोर्चे पर भारी परेशानी का सामना करना पड़ रहा है। न्यायालय की सजगता का स्वागत होना चाहिए और लोगों को आने वाले दिनों में राहत की उम्मीद रखनी चाहिए। हर किसी को अपने आसपास गौर करना चाहिए। प्रदूषण फैलाकर हमने हालात को किस कदर बिगाड़ लिया है? राष्ट्रीय राजधानी में धूल और धुंध की वजह से कभी-कभी 800 मीटर से ज्यादा दूर की चीजों को देखना मुश्किल हो जा रहा है। न्यायाधीश अभय एस ओका और ऑगस्टीन जॉर्ज मसीह की पीठ ने उचित ही कहा है कि संविधान के अनुच्छेद 21 के तहत प्रदूषण मुक्त वातावरण में रहने का अधिकार एक मौलिक अधिकार है। कोई भी धर्म ऐसी किसी गतिविधि को प्रोत्साहन नहीं देता है, जो प्रदूषण को बढ़ावा देती हो या लोगों के स्वास्थ्य के साथ समझौता करती हो। सर्वोच्च न्यायालय की इस टिप्पणी का व्यापक महत्व है। धर्म पवित्रता और शुद्धता की दुहाई देता है, लोग बहुत धार्मिक होने का दावा करते हैं, मगर धर्म के पृथ्वी या पर्यावरण के अनुकूल जो संदेश निर्देश हैं, उनकी अवहेलना करते रहते हैं। वैज्ञानिक तो लगातार चेतावनी देते रहते हैं, कानून और स्वास्थ्य को लेकर भी चिंता जताई जाती है, पर बहुत से लोगों को यह बताना जरूरी है कि प्रदूषण फैलाना किसी अधर्म या दुष्कृत्य से कम नहीं है। पृथ्वी या पर्यावरण का उतना ही दोहन करना चाहिए, जितना जीवन के लिए बेहद जरूरी है। सर्वोच्च न्यायालय ने जो कहा है, उसे विस्तार से समझने की जरूरत है। न्यायालय यह जानने के प्रयास में है कि पटाखों पर प्रतिबंध को लेकर सभी पटाखा निमार्ताओं को नोटिस जारी किया गया था या नहीं ? पुलिस ने पटाखों की ऑनलाइन बिक्री पर अंकुश के लिए क्या कदम उठाए थे? न्यायालय ने माना है कि दिल्ली पुलिस ने आतिशबाजी पर प्रतिबंध के आदेश को गंभीरता से नहीं लिया। अब दिल्ली पुलिस को पटाखों पर प्रतिबंध सुनिश्चित करने के लिए अलग इकाई बनानी पड़ेगी। राष्ट्रीय राजधानी में आने वाले दिनों में शादी-विवाह या अन्य उत्सवों के समय पटाखे जलाने पर रोक लग सकती है। **-राकेश जैन गोदिका**

परिदृश्य

शिक्षा और तकनीक

हाल-फिलहाल की कोई भी तकनीक इतनी उत्तेजना पैदा नहीं कर सकी है, जितनी जेनरेटिव आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई) यानी कृत्रिम बुद्धिमत्ता ने पैदा की है। यह कल्पना की जा सकती है कि एआई में इस तरह के आश्चर्यजनक विकास के लिए जिम्मेदार लोग इसके भविष्य को लेकर सही ही कहते रहे हैं कि जल्द ही यह इंसानों से ज्यादा बुद्धिमान हो जाएगी। हमें यह अनुमान भी मान लेना चाहिए कि यह 'बुद्धिमत्ता' उन व्यवहारों और कार्यों को सक्षम बनाएगी, जो उन इंसानी क्षमताओं का नतीजा होती हैं, जिनको हम मूलतः मानवीय मानते हैं और उसी आधार पर फैसले लेते हैं। इसे हम सुपर ह्यूमन एआई (एसएचएआई) कह सकते हैं। मगर सवाल है कि शिक्षा में इसकी मदद किस तरह ली जा सकती है? ऐसे सुपर ह्यूमन रोबोट शिक्षा में चार प्रकार की भूमिकाएं निभा सकते हैं- छात्र झ्र सहायक के रूप में, शिक्षक सहायक के रूप में, छात्रों के लिए शिक्षक के रूप में और शिक्षा प्रबंधन संबंधी कार्यों में सहायक के रूप में (इस पर हम यहां बात नहीं करेंगे)। सुपर ह्यूमन तक पहुंचने से पहले ही एआई का शिक्षा में अत्यंत सावधानी से इस्तेमाल होना चाहिए। नीति यही होनी चाहिए शिक्षा में इसका इस्तेमाल आखिरी विकल्प के रूप में हो और ऐसा तभी किया जाए, जब सुनिश्चित हो जाए कि इससे कोई खतरा नहीं है। चार परस्पर जुड़े कारणों की वजह से हमें यह नीति बनानी चाहिए। पहला कारण है, खोखला करना। अगर सुपर ह्यूमन एआई सहायक होगी, तो न शिक्षकों को और न ही छात्रों को सोचने की जरूरत पड़ेगी। यदि आप किसी क्षमता का उपयोग करना बंद कर देते हैं, तो उसको खो देते हैं या वह विकसित नहीं हो पाती। चूंकि, सुपर ह्यूमन एआई में इंसानों जैसी सोचने की क्षमता होगी, इसलिए इसके आने से ज्ञान संबंधी खोखलापन निश्चित तौर पर दिखेगा। हालांकि, लगभग सभी मानवीय क्षमताओं को लेकर यह डर बना रहेगा। दूसरा, फॉर्म फैक्टर यह एक तकनीकी शब्द है। इसका मतलब है कि किसी को कोई चीज किस भौतिक रूप में चाहिए- बक्सानुमा, छोटा, मुलायम या अन्य रूपों में। फोन के जरिये हमसे बातचीत करने वाले एआई का फॉर्म फैक्टर एआई रोबोट से अलग होता है, जो हमें मार भी सकता है। शिक्षा से जुड़ी हमारी इच्छाएं और सीखने की मानवीय प्रक्रियाएं कुछ ऐसी होती हैं कि फोन या कंप्यूटर वाले फॉर्म फैक्टर शिक्षा में सुपर ह्यूमन एआई का इस्तेमाल सीमित कर देंगे, क्योंकि प्रभावी शिक्षा के लिए छात्र की शारीरिक व मानसिक दशा को समझना, उसका ध्यान आकर्षित करना आदि आवश्यक होता है। और ऐसा बच्चों के समूह में किया जाना चाहिए, क्योंकि हम चाहते हैं कि वे सामाजिक बनें। इन सबका मतलब है कि सुपर ह्यूमन एआई को मौजूदा कक्षा जैसे किसी परिवेश में काम करना होगा। कप्यूटर बॉक्स या स्क्रीन के अंदर फंसे सुपर ह्यूमन एआई की अपनी सीमाएं होंगी। तीसरा है, नियंत्रण यदि सुपर- ह्यूमन एआई वाकई उसी रूप में हो, जैसा हम सोच रहे हैं, तो क्या हम इसे अपने निजी और सामूहिक जीवन पर नियंत्रण करने की अनुमति देना पसंद करेंगे? निस्संदेह, सुपर ह्यूमन एआई नियंत्रण करना चाहेगा, चाहे शिक्षक के रूप में या सहायक के रूप में। क्या हमें इस रूप में आगे बढ़ाना चाहिए? याद रखिए, जो शिक्षा को नियंत्रित करता है, वह हमें भी काबू में करता है। चौथा है, विस्तार।

पूरा विश्व गुरु नानक देव की प्रभात फेरी में गुरबाणीमय हो रहा है-धन गुरु नानक सारा जग तारिया

भारत के करीब सभी प्रदेशों में प्रभात फेरी की गूंज-वाहेगुरु जी का खालसा वाहेगुरु जी की फतेह

प्रातःवेले अमृत वेले की मधुर बेला पर दैनिक प्रभात फेरी में धन गुरु नानक सारा जग तारिया की गूंज-गुरु नानक जी तुसी मेहर करो-एडवोकेट किशन सनमुखदास भावनानी गोंदिया महाराष्ट्र गोंदिया - वैश्विक स्तरपर सारी दुनियाँ में धर्मनिरपेक्षता के लिए विख्यात भारत में हर धर्म जाति के त्यौहार उत्सव धार्मिक महोत्सव बड़े धूमधाम से मनाए जाते हैं, उनमें से कई उत्सव ऐसे हैं जिन्हें वैश्विक स्तरपर भारत के निवासी मूल भारतीयों द्वारामनाए जाते हैं,उन्हीं में से एक गुरुनानक जयंती व प्रभात फेरी महोत्सव है।मैंने रविवार दिनांक 10 नवंबर 2024 को महाराष्ट्र ऑल इंडिया रेडियो पर शाम को मराठी भाषा में गुरु नानक देव जी का सत्संग व जीवनी का महिमा मंडन बड़े ध्यान से सुना तो मुझे यकीन हो गया कि यह पूरे देश में अलग अलग खूबसूरत भाषाओं में गुरु नानक देव जी का महिमा मंडन किया जा रहा होगा, फिर मैंनें अमेरिका में मेरे रिश्तेदार से फोन पर चर्चा की तो उन्होंने भी प्रभात फेरी व गुरु नानक जयंती मनाने की बात कही इसलिए आज मैंने प्रभात फेरी पर आर्टिकल लिखने की ठानी,क्योंकि मैं स्वयं भी गुरुद्वारे में जाता हूं इसलिए मैंनें ग्राउंड रिपोर्टिंग कर इस विषय पर आर्टिकल लिखा।चूँकि अभी 555 वीं गुरु नानक जयंती शुक्रवार दिनांक 15 नवंबर 2024 को है जोकि दीपावली के बाद से शुरू हुए कार्तिक मास में प्रतिदिन प्रातःकाल अमृतवेले की मधुर बेला पर सिख समाज व सिंधी समाज की ओर से दैनिक प्रभात फेरी का आयोजन किया जा रहा है जिसमें धन गुरु नानक सारा जग तारिया और वाहेगुरु जी का खालसा वाहेगुरु जी की फतेह के नारों से हर राज्य हर शहर और अनेक देशों में वहां की धरती गूंज उठी है, और हो भी क्यों ना,क्योंकि15 नवंबर 2024 को गुरु नानकदेव जीको 555 वाँ अवतरण दिवस मनाया जाएगा, जिसकी खुशी से पूरा कार्तिक मास अनेक उत्सव के साथ मनाया जा रहा है इसी कड़ी में हमारे छोटे से गोंदिया शहर में भी रोज प्रातः कालीन अमृत वेले सिख समाज व सिंधी समाज द्वारा प्रभात फेरी निकालकर अलग-अलग क्षेत्र में के अंतर्गत भ्रमण करे प्यासी रूहों को तृप्त करने की कोशिश कर रहे हैं। चूंकि रोज प्रभात फेरी मेंभक्तगण आनंदित हो रहे हैं, इसलिए आज हम मीडिया में उपलब्धजानकारी के सहयोग से और मेरी ग्राउंड रिपोर्टिंग के आधार पर हम चर्चा करेंगे, पूरे विश्व में बाबा गुरु नानक देव के 555 वें अवतरण दिवस 15 नवंबरे 2024 के इंतजार में आंखें बिछाए भक्तगण। प्रातः काल अमृत वेले की मधुर बेला पर दैनिक प्रभात फेरी में धन गुरु नानक सारा जग उतारिए की गूंज।साथियों बात अगर हम गुरुनानक देव जयंती के उपलक्ष में कार्तिक माह से लेकर प्रभात फेरी पर्व मनाने की करें तो, इस दिन प्रातः काल स्नान करके प्रभात फेरी की शुरूआत की जाती है। इसके साथ ही सिख समुदाय के लोग गुरुद्वारे में भजन और कीर्तन करते हैं। इसके साथ ही गुरु नानक जी को विशेष रूप से रुमाल भी सजाया जाता है। पूरे गुरुद्वारों को दीपों से सजाया जाता हैप्रार्थना सभा के बाद लंगर का आयोजन करने के साथ सेवा दान किया जाता है। इसके साथ ही गुरबाणी का पाठ किया जाता है।गुरु नानक देव के पावन प्रकाशोत्सव पर सिख समाज के लोगों ने दिवाली के चंद्र से लेकर प्रभात फेरी निकाली जाती है। प्रभातफेरी में सिख समुदाय सिन्धी समुदाय के महिला पुरुष एवं बच्चों ने बढ़चढ़ कर हिस्सा ले रहें है। प्रभातफेरी गुरुद्वारों से निकलकर नगर में भ्रमण करते हुए वापस गुरुद्वारा पहुंचर ही है। प्रभात फेरी में शामिल महिलाएं, बच्चे व बुजुर्ग ढोलक बजाते धन गुरु नानक, धन गुरु नानक की गूंज से माहौल भक्तिमय हो गया। संगत ने दुख भंजन तेरा नाम जी ठाकुर गाइए आतम रंग, मारेया सिक्का जगत विच नानक निर्मल पंथ चलाया, सब ते वड्डा सतगुर नानक जिन कल राखी मेरी आदि शबदों का गायन किया। इधर प्रकाश उत्सव के उपलक्ष्य में हर गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी की ओर से हर कस्बे में प्रभातफेरी निकालजा रही है। रोजाना सुबह 4-5 बजे पूरे कस्बे में प्रभात फेरी 15 नवंबर तक निकाली जाएगी। प्रभातफेरी में गुरु नानक देवजी की महिमा का गुणगान किया जाता है। प्रभातफेरी गुरुद्वारा परिसर से शुरू होकर कस्बे के गली-मोहल्ले से होते हुए वापस गुरुद्वारा पहुंचकर समाप्त होती है। सिख समुदाय के लोगों का एक महत्वपूर्ण त्योहार है। यह पर्व गुरु नानक देव जी के जन्म दिवस के अवसर पर मनाया जाता है। कहा जाता है कि कार्तिक माह में शुक्ल पक्ष कि पूर्णिमा तिथि पर गुरु नानक देव जी का जन्म हुआ था। इस साल कार्तिक पूर्णिमा 15 नवंबर को है, इसलिए 15 नवंबर को ही सिख धर्म के पहले गुरु, गुरु नानक देव जी जयंती मनाई जाएगी। गुरु नानक देव की जयंती को गुरु पर्व और प्रकाश पर्व के रूप में मनाया जाता है। इस दिन सिख लोग गुरुद्वारे जाकर गुरुग्रंथ साहिब का पाठ करते हैं। गुरु पर्व पर सभी गुरुद्वारों में भजन, कीर्तन होता है और प्रभात फेरियां भी निकाली जाती हैं।

साथियों बात अगर हम प्रभात फेरी के इतिहास और महत्व की करें तो प्रभात फेरी का इतिहास काफी पुराना है। लेकिन खासतौर से सिख धर्म में प्रभात फेरी को अधिक अहमियत मिली है। आज भी न सिर्फ सिख बल्कि दूसरे समुदायों के लोग भी गुरुपूरब से पहले ही प्रभात फेरियां शुरू करते हैं, ताकि गली-गली घूमकर सिख गुरुओं की सीख को लोगों तक पहुंचाया जाए। तड़के-तड़के गुरुद्वारों से निशान साहिब लेकर जत्थे गलियों में निकलते हैं। जहां-जहां से प्रभात फेरी निकलती है वहां-वहां अब लोग चाय के साथ-साथ खाने-पीने के स्टॉल भी लगाते हैं।स्पेशल बैंड परफॉर्मेंस होती है। गतका अखाड़े परफॉर्म करते हैं। अब इन प्रभात फेरियों में हजारों लोग जुड़ने लगे कुछ लोगों का मानना है कि प्रभात फेरी का मकसद उन आलसी लोगों को सुबह समय से जगाना भी है जो अपने स्वार्थ के लिए भगवान को भूल चुके हैं। सुबह का समय भगवान को याद करने का होता है, ताकि आने वाला जीवन अच्छा बीते लेकिन कुछ लोग अपने आलस्य के चक्कर में आराधना से दूर होते जा रहे हैं।

साथियों बात अगर हम बाबा गुरुनानक देव की जीवनी की करें तो, गुरुनानक देव जी सिखों के प्रथम गुरु थें। इनके जन्म दिवस को गुरुनानक जयंती के रूप में मनाया जाता है। नानक जी का जन्मे 1469 में कार्तिक पूर्णिमा को पंजाब (पाकिस्तान) क्षेत्र में रावी नदी के किनारे स्थित तलवंडी नाम गांव में हुआ। नानक जी का जन्म एक हिंदू परिवार में हुआ था। इनके पिता का नाम कल्याण या मेहता कालू जी था और माता का नाम तृप्ती देवी था। 16 वर्ष की उम्र में इनका विवाह गुरदासपुर जिले के लाखौकी नाम स्थान की रहने वाली कन्या सुलक्खनी से हुआ।इनके दो पुत्र श्रीचंद और लख्मी चंद थें।दोनों पुत्रों के जन्म के बाद गुरुनानक देवी जी अपने चार साथी मरदाना,लहणा , बाला और रामदास के साथ तीर्थयात्रा पर निकल पड़े। ये चारों ओर घूमकर उपदेश देने लगे। 1521 तक इन्होंने तीन यात्राचक्र पूरे किए, जिनमें भारत, अफगानिस्तान, फारस और अरब के मुख्य मुख्य स्थानों का भ्रमण किया। इन यात्राओं को पंजाबी में उदासियाँ कहा जाता है। गुरुनानक देव जी मूर्तिपूजा को निरर्थक माना और हमेशा ही रूढ़ियों और कुसंस्कारों के विरोध में रहें। नानक जी के अनुसार ईश्वर कहीं बाहर नहीं, बल्कि हमारे अंदर ही है। तत्कालीन इब्राहीम लोदी ने इनको कैद तक कर लियाथा। आखिर में पानीपत की लड़ाई हुआ, जिसमें इब्राहीम हार गया और राज्य बाबर के हाथों में आ गया।तब इनको कैद से मुक्ति मिली।गुरुनानक जी के विचारों से समाज में परिवर्तन हुआ। नानक जी ने करतारपुर (पाकिस्तान) नामक स्थान पर एक नगर को बसाया और एक धर्मशाला भी बनवाई।

नानक जी की देह त्याग 22 सितंबर1539 ईस्वी को हुआ। इन्होंने अपनी मृत्यु से पहले अपने शिष्य भाई लहणा को अपना उत्तराधिकारी बनाया, जो बाद में गुरु अंगद देव नाम से जाने गए। साथियों बात अगर हम बाबा गुरु नानक देव के उपदेशों की करें तो, किरत करो नाम जपो और बांट कर खाओ, अर्थात अपना जीवनयापन करने के लिए हमें कार्य करना चाहिए, उस परमात्मा की बंदगी भजन और कीर्तन करना चाहिए और हमेशा खाना बांट कर खाना चाहिए।सो क्यों मंदा आखिए जित जमी राजन,अर्थात यह शब्द गुरु जी ने समाज में महिलाओं की स्तर को ऊंचा उठाने के लिए कहे थे कि उस औरत को हम बुरा कैसे कह सकते हैं जो एक राजा को भी जन्म देती है।गुरु जी ने और उपदेश दिया था कि इस संसार में जो कुछ भी हो रहा है वह उस परमात्मा के हुक्म के अनुसार हो रहा है। सब कुछ उस परमात्मा के हुक्म के अधीन ही है उस हुक्म के बाहर कुछ भी नहीं हो रहा और इंसान के जीवन में सुख और दुख जो कुछ भी घटता है वह उसके द्वारा किए गए कर्मों के अनुसार ही होती हैं। गुरु नानक साहब केवल एक ईश्वर की पूजा करते हैं और अपने सिखों को भी ऐसा करने का निर्देश देते हैं। मैं मूल मंत्र लिख रहा हूं जो सिख विचारधारा का मूल है और गुरु ग्रंथ साहिब की शुरूआत हैं। एक ओं कार सतनाम, करता पुरख निरभउ निरवैर,अकाल मूरत, अजूनी सैभं, गुरप्रसादि। अर्थ.. ईश्वर एक है, उसका नाम सत्य है, रचयिता, निर्भय, द्वेष नहीं, कालातीत, जन्महीन, आत्म अस्तित्व और गुरु की कृपा से आप मिल सकते हैं। तो, यह गुरु नानक और सिख धर्म के मुख्य सिद्धांत और विचारधारा है। गुरु ग्रंथ साहिब में 06 गुरुओं, 11 भट्ट जिन्होंने निराकार ईश्वर के प्रकाश के रूप में हमारे गुरुओं की स्तुति की और 15 भगतों द्वारा लिखित बानी शामिल हैं, जिनकी विचारधारा गुरु नानक साहब से मेल खाती है। गुरबानी निराकार ईश्वर से गुरुओं के मुख से निकली है जैसा कि गुरु ग्रंथ साहिब में लिखा है न किरामायण या वेदों का मिश्रण जैसे कुछ लोग गुरबानी पढ़े बिना कह रहे हैं।

अतः अगर हम उपरोक्त पूरे विवरण का अध्ययन कर इसका विश्लेषण करें तो हम पाएंगे कि पूरा विश्व गुरु नानक देव की प्रभात फेरी में गुरबाणीमय हो रहा है-धन गुरु नानक सारा जग तारिया।भारत के करीब सभी प्रदेशों में प्रभात फेरी की गूंज-वाहेगुरु जी का खालसा वाहेगुरु जी की फतेह।प्रातःवेले अमृत वेले की मधुर बेला पर दैनिक प्रभात फेरी में धन गुरु नानक सारा जग तारिया की गूंज-गुरु नानक जी तुसी मेहर करो।

संकलनकर्ता लेखक-कर विशेषज्ञ स्तंभकार साहित्यकार अंतरराष्ट्रीय लेखक चिंतक कवि संगीत माध्यमा सीए (एटीसी) एडवोकेट किशन सनमुखदास भावनानी गोंदिया महाराष्ट्र

पंच कल्याणक महोत्सव का भव्य आगाज

माता पिता, सौंधर्म इन्द्र कृत्रिम ट्रेक्टर हाथी, इन्द्र इन्द्राणी बग्गी पर सवार, धूमधाम से निकला रथ यात्रा परिक्रमा महोत्सव

सौरभ जैन. शाबाश इंडिया

पिड़ावा। सकल दिगंबर जैन समाज के तत्वावधान में आयोजक मुमुक्ष मण्डल जैन युवा फैडरेशन वितराग विज्ञान पाठशाला एवं मोक्षायतन ट्रस्ट के द्वारा पंच कल्याणक प्राण प्रतिष्ठा महोत्सव एवं विश्व शांति महायज्ञ प्रतिष्ठाचार्य अंतराष्ट्रीय ख्याति प्राप्त पंडित रजनीभाई दोषी हिम्मतनगर के कूशल निर्देशन में भव्य रथ परिक्रमा महोत्सव का मंगलमय गर्भ कल्याण की पूर्व क्रियाएं बताई गई। इस अवसर पर प्रातः शान्ति जाप, अनुष्ठान, अभिषेक, पूजन के बाद भव्य शोभायात्रा निकाली गई। जिसमें महिलाओं एवं युवाओं ने उत्साह से भाग लिया। शोभायात्रा में बाल आदि तीर्थंकर के माता-पिता सौधर्म इन्द्र व इन्द्राणी कृत्रिम ट्रेक्टर हाथी पर कुबेर इन्द्र व इन्द्राणी एवं अन्य इन्द्र इन्द्राणी व श्रेयांस राजा 20 बग्गीयो में चल रहे थे। जैन समाज प्रवक्ता मुकेश जैन चेलावत ने बताया कि मंगलवार को भगवान के गर्भ कल्याण के पूर्व रूप का कार्यक्रम किया गया। जिसमें प्रभु आज्ञा के बाद श्री जी को रथ में विराजमान कर भव्य शोभायात्रा स्वाध्याय भवन से प्रारंभ हुई। शोभायात्रा में बेंण्ड़ बाजों के साथ पूरूष वर्ग सफेद वस्त्रों में वह महिलाये केसरिया व मण्डल की साड़ी में भक्ति करते हुवे चल रहे थे। उसके बाद बाल आदि तीर्थंकर की माता मीना जैन, पिता सुनील कुमार जामनगर, सौधर्म इन्द्र धनेश शाह, इन्द्र इन्द्राणी दीपा बहन, कुबेर इन्द्र राकेश प्रेमी, इन्द्र इन्द्राणी रंजना जैन व सभी इन्द्र इन्द्राणी बग्गीयों में बैठकर घट यात्रा नयापुरा, नई सब्जी मंडी, खण्डुपुरा, सेठान मौहल्ला, शहर मौहल्ला होते हुवे रथयात्रा को पंचकल्याणक स्थल नायरा पेट्रोल पंप ग्रीन वैली रिसोर्ट के पीछे पहुंची। शोभायात्रा में महिलाएं सिर पर मंगल कलश लेकर चल रही थी। पूरूष वर्ग भक्ति करते हुवे चल रहे थे। शोभायात्रा में सभी ग्रुप की महिलाएं भक्ति करते हुए चल रही थी। उसके बाद भगवान को पंच कल्याणक स्थल की अस्थाई वेदी पर विराजमान किया गया व पंच कल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव का ध्वाजारोहण अनिल इन्जिनियर, ज्योति जैन उज्जैन ने किया व सिंहद्वार का उद्घाटन अचरज देवी, स्व.निहालचन्द पीतल फैक्ट्री जयपुर द्वारा व प्रतिष्ठा मंडप उद्घाटन विजय जैन, इन्द्रा बड़जात्या इन्दौर, प्रतिष्ठा मंच उद्घाटन प्रेमचन्द बजाज, सुनीता बजाज कोटा, श्री याग मण्ड़ल विधान के उद्घाटन कर्ता पद्म जैन, रानी पहाड़ियां इन्दौर, श्री मांग मण्डल विधानकर्ता नेमीचंद जैन, उर्मिला बघेरवाल भीलवाड़ा द्वारा किया गया। रात्रि में जिनेन्द्र भक्ति, प्रवचन, प्रवचन के बाद इन्द्रसभा लगाई गई व माता के सोलह सपने दिखाये गये। कार्यक्रम का संचालन पं.संजय जेवर, मनीष शास्त्री द्वारा किया गया। इस अवसर पर इन्दौर, उज्जैन, आगर, सुसनेर, कोटा, झालावाड़, पाटन, भवानी मण्डी, बम्बई, दिल्ली, गुजरात, अमेरिका आदि स्थानों से श्रावक श्राविकाये 6 दिवसीय कार्यक्रम में भाग लेने आये हैं। गर्भ कल्याणक की पूर्व क्रियाएं में रथयात्रा को सकल दिगम्बर जैन समाज, मुख्य अतिथियों सहित सैकड़ो लोगों ने रथ को खींचकर पूण्य लाभ लिया।

सहमा-सहमा आज

सास ससुर सेवा करे, बहुएं करती राज।
बेटी सँग दामाद के, बसी मायके आज॥

कौन पूछता योग्यता, तिकड़म है आधार।
कौवे मोती चुन रहे, हंस हुये बेकार॥

परिवर्तन के दौर की, ये कैसी रफ़्तार।
गैरों को सिर पर रखें, अपने लगते भार॥

अंधे साक्षी हैं बनें, गूंगे करें बयान।
बहरे थामें न्याय की, 'सौरभ' आज कमान॥

कौवे में पूर्वज दिखे, पत्थर में भगवान।
इंसानो में क्यों यहाँ, दिखे नहीं इंसान॥

जब से पैसा हो गया, सम्बंधों की माप।
मन दर्जी करने लगा, बस खाली आलाप॥

दहेज आहुति हो गया, रस्में सब व्यापार।
धू-धू कर अब जल रहे, शादी के संस्कार॥

हारे इज्जत आबरू, भीरु बुजदिल लोग।
खोकर अपनी सभ्यता, प्रश्नचिन्ह पर लोग॥

अच्छे दिन आये नहीं, सहमा-सहमा आज।
'सौरभ' हुए पेट्रोल से, महंगे आलू-प्याज॥

गली-गली में मौत है, सड़क-सड़क बेहाल।
डर-डर के हम जी रहे, देख देश का हाल॥

लूट-खून दंगे कहीं, चोरी भ्रष्टाचार॥
खबरें ऐसी ला रहा, रोज सुबह अखबार।

मंच हुए साहित्य के, गठजोड़ी सरकार।
सभी बाँटकर ले रहे, पुरस्कार हर बार॥

नई सदी में आ रहा, ये कैसा बदलाव।
संगी-साथी दे रहे, दिल को गहरे घाव॥

हम खतरे में जी रहे, बैठी सिर पर मौत।
बेवजह ही हम बने, इक-दूजे की सौत॥

जर्जर कश्ती हो गई, अंधे खेवनहार।
खतरे में 'सौरभ' दिखे, जाना सागर पार॥

थोड़ा-सा जो कद बढ़ा, भूल गए वह जात।
झुग्गी कहती महल से, तेरी क्या औकात॥

मन बातों को तरसता, समझे घर में कौन।
दामन थामे फोन का, बैठे हैं सब मौन॥

हत्या-चोरी लूट से, कांपे रोज समाज।
रक्त रंगे अखबार हम, देख रहे हैं आज॥

कहाँ बचे भगवान से, पंचायत के पंच।
झूठा निर्णय दे रहे, 'सौरभ' अब सरपंच॥

योगी भोगी हो गए, संत चले बाजार।
अबलायें मठलोक से, रह-रह करे पुकार॥

दफ्तर, थाने, कोर्ट सब, देते उनका साथ।
नियम-कायदे भूलकर, गर्म करे जो हाथ॥

—डॉ. सत्यवान 'सौरभ'
तितली है खामोश (दोहा संग्रह)

कृषि में महिलाओं को सशक्त बनाती नमो ड्रोन दीदी योजना

वैश्विक स्तर पर, ड्रोन तकनीक ने कृषि सहित कई उद्योगों में क्रांति ला दी है। भारत में, ड्रोन में अपार संभावनाएं हैं: वे बड़े क्षेत्रों का सर्वेक्षण कर सकते हैं, फसलों की निगरानी कर सकते हैं, बीमारियों या कीटों का पहले से पता लगा सकते हैं, और कीटनाशकों और उर्वरकों के सटीक उपयोग की सुविधा प्रदान कर सकते हैं। यह सटीक खेती का तरीका पारंपरिक खेती के तरीकों से जुड़ी लागत और बर्बादी को कम करते हुए फसल की पैदावार को बढ़ाता है।

नमो ड्रोन दीदी सटीक कृषि और संसाधन अनुकूलन में योगदान दे सकती है। भारत का कृषि क्षेत्र प्रौद्योगिकी-आधारित समाधानों के एकीकरण के साथ परिवर्तन के शिखर पर है। ड्रोन प्रौद्योगिकी पर ध्यान केंद्रित करने वाली नमो ड्रोन दीदी जैसी योजनाएँ सटीक कृषि और संसाधन अनुकूलन के माध्यम से खेती को आधुनिक बनाने की क्षमता प्रदान करती हैं, जो कृषि में प्रमुख चुनौतियों का समाधान करती हैं। ड्रोन उर्वरकों और कीटनाशकों के सटीक अनुप्रयोग को सक्षम करते हैं, अपव्यय को कम करते हैं और समान वितरण सुनिश्चित करते हैं। नमो ड्रोन दीदी योजना के तहत ड्रोन रासायनिक उपयोग में 30% तक की कमी सुनिश्चित करते हैं। ड्रोन फसलों की वास्तविक समय की निगरानी की अनुमति देते हैं, फसल के स्वास्थ्य, मिट्टी की स्थिति और समय पर हस्तक्षेप के लिए प्रारंभिक रोग का पता लगाने पर डेटा प्रदान करते हैं। आंध्र प्रदेश में, ड्रोन ने कीटों के हमलों का समय पर पता लगाने के कारण फसल के नुकसान को 20% तक कम करने में मदद की। ड्रोन फसल के विकास पैटर्न, मिट्टी के स्वास्थ्य और उपज के अनुमान पर सटीक डेटा प्रदान करते हैं, जिससे खेत प्रबंधन और निर्णय लेने में सुधार होता है। वैश्विक स्तर पर, ड्रोन तकनीक ने कृषि सहित कई उद्योगों में क्रांति ला दी है। भारत में, ड्रोन में अपार संभावनाएं हैं: वे बड़े क्षेत्रों का सर्वेक्षण कर सकते हैं, फसलों की निगरानी कर सकते हैं, बीमारियों या कीटों का पहले से पता लगा सकते हैं, और कीटनाशकों और उर्वरकों के सटीक उपयोग की सुविधा प्रदान कर सकते हैं। यह सटीक खेती का तरीका पारंपरिक खेती के तरीकों से जुड़ी लागत और बर्बादी को कम करते हुए फसल की पैदावार को बढ़ाता है। हालांकि, भारतीय कृषि में ड्रोन को अपनाना धीमा रहा है। उच्च लागत, सीमित जागरूकता और ग्रामीण क्षेत्रों में अपर्याप्त तकनीकी बुनियादी ढांचे ने व्यापक कार्यान्वयन में बाधा उत्पन्न की है। इन चुनौतियों का समाधान करने के लिए, नमो ड्रोन दीदी योजना न केवल ड्रोन तकनीक को बढ़ावा देती है बल्कि ग्रामीण महिलाओं को सशक्त भी बनाती है। महाराष्ट्र में तैनात ड्रोन ने किसानों को पैदावार का बेहतर अनुमान लगाने और उत्पादकता बढ़ाने में सक्षम बनाया। ड्रोन पोषक तत्वों जैसे इनपुट के परिवर्तनीय दर अनुप्रयोग की अनुमति देते हैं, विशिष्ट क्षेत्र की जरूरतों के अनुसार समायोजन करते हैं, इनपुट दक्षता को अधिकतम करते हैं। उत्तर प्रदेश में, ड्रोन-सहायता प्राप्त खेती ने किसानों को मिट्टी की उर्वरता भिन्नताओं के आधार पर उर्वरकों को सटीक रूप से लागू करने में सक्षम बनाया, जिससे पोषक तत्वों के उपयोग की दक्षता में वृद्धि हुई। ड्रोन तकनीक में स्वचालन कीटनाशकों या उर्वरकों के छिड़काव जैसे कार्यों में मानवीय त्रुटि को कम करता है, जिससे अधिक प्रभावी संचालन होता है। मध्य प्रदेश में एक पायलट परियोजना ने कीटनाशक छिड़काव में कम त्रुटियों को दिखाया, जिससे फसल की उपज में 15% सुधार हुआ। ड्रोन मिट्टी में नमी के स्तर का आकलन करने में मदद करते हैं, जिससे सटीक सिंचाई की सुविधा मिलती है, जिससे पानी का संरक्षण होता है और यह सुनिश्चित होता है कि केवल आवश्यक क्षेत्रों में ही पानी मिले। ड्रोन-सहायता प्राप्त सिंचाई ने गुजरात के जल-दुर्लभ क्षेत्रों में पानी के उपयोग को 15% तक कम कर दिया। इनपुट लागत में कमी: उर्वरकों और कीटनाशकों जैसे इनपुट के सटीक उपयोग से, किसान लागत बचाते हैं, जिससे बेहतर संसाधन प्रबंधन में योगदान मिलता है। पंजाब में स्वयं सहायता समूह ने नमो ड्रोन दीदी योजना के तहत ड्रोन का उपयोग करके इनपुट पर 20% लागत बचत की सूचना दी। ड्रोन कीटनाशकों और उर्वरकों के छिड़काव जैसे कार्यों में मैनुअल श्रम की आवश्यकता को कम करते हैं, जिससे किसानों को श्रम लागत में कटौती करने और परिचालन दक्षता में सुधार करने में मदद मिलती है। नमो ड्रोन दीदी के तहत ड्रोन सेवाओं को अपनाने के बाद हरियाणा के किसानों ने श्रम व्यय में 25% तक की कमी का अनुभव किया। ड्रोन तकनीक बड़े खेतों में छिड़काव और निगरानी जैसे कार्यों के लिए आवश्यक समय को काफी कम कर देती है, जिससे समग्र कृषि उत्पादकता में सुधार होता है। राजस्थान में, ड्रोन की सहायता से कीटनाशक के छिड़काव ने संचालन में लगने वाले समय को 7 दिनों से घटाकर 2 दिन कर दिया, जिससे उत्पादकता में उल्लेखनीय वृद्धि हुई। ड्रोन सटीक कीट प्रबंधन में मदद करते हैं, कीटनाशकों के अत्यधिक उपयोग को कम करते हैं, जिससे दीर्घकालिक मिट्टी और पारिस्थितिकी तंत्र के स्वास्थ्य में सुधार होता है। तमिलनाडु के किसानों ने ड्रोन-सहायता प्राप्त कीट प्रबंधन प्रणालियों का उपयोग करके फसल की गुणवत्ता में 10% सुधार की सूचना दी। नमो ड्रोन दीदी योजना खेती को आधुनिक बनाने, सटीक कृषि को बढ़ाने और इष्टतम संसाधन उपयोग सुनिश्चित करने में प्रौद्योगिकी-आधारित कृषि की अपार क्षमता को प्रदर्शित करती है। उचित कार्यान्वयन और समर्थन के साथ, ऐसी पहल भारत के कृषि क्षेत्र को स्थिरता और बढ़ी हुई उत्पादकता की ओर ले जा सकती हैं। हालाँकि भारत कृषि में ड्रोन को एकीकृत करने वाला पहला देश नहीं है, लेकिन तकनीक के माध्यम से महिलाओं को सशक्त बनाने पर इसका ध्यान अद्वितीय है। निरंतर सरकारी समर्थन, बेहतर बुनियादी ढाँचे और किसानों की बढ़ती जागरूकता के साथ, नमो ड्रोन दीदी योजना में खेती को आधुनिक बनाने, खाद्य सुरक्षा बढ़ाने और महिलाओं को आर्थिक रूप से सशक्त बनाने की क्षमता है। इन चुनौतियों का समाधान करके, यह पहल लैंगिक समानता और ग्रामीण तकनीकी उन्नति को बढ़ावा देते हुए कृषि उत्पादकता को बढ़ावा देने की मांग करने वाले अन्य विकासशील देशों के लिए एक मॉडल के रूप में काम कर सकती है।

-प्रियंका सौरभ
रिसर्च स्कॉलर इन पोलिटिकल साइंस, कवयित्री, स्वतंत्र पत्रकार एवं स्तंभकार

दिग. जैन महासमिति राजस्थान अंचल द्वारा "श्रावकाचार विद्वत संगोष्ठी सम्पन्न"

जयपुर. शाबाश इंडिया

प्रतापनगर सेक्टर-8 में श्री शांतिनाथ दिगम्बर जैन मंदिर के संत भवन में परम पूज्य उपाध्याय ऊर्जयन्त सागर जी महाराज के परम सानिध्य में श्रावकाचार विषय पर विद्वत संगोष्ठी सानंद संपन्न हुई। इस संगोष्ठी के विशिष्ट वक्ता डॉ. सनत कुमार जैन ने बताया कि प्रत्येक मनुष्यों को अपने पापों से बचने एवं जीवन को धर्म की ओर मोड़ने हेतु किए गये पुरूषार्थ ही जीवन में काम आयेगें। क्योंकि आहार, निन्दा, भय, और मैथुन-ये चारों क्रियायें पशुओं में भी पाई जाती है। एक मात्र धर्म ही मनुष्य को मानव बनाता है। संगोष्ठी मुख्य वक्ता प्रोफेसर डॉ. श्रीयांश सिंघई ने बताया कि चारों गतियों में से मात्र मनुष्य गति में ही धर्म करने का अवसर मिलता हैऔर इस अवसर को भूल वश पांचों इन्द्रियों के भोगों में ही बिता दिया जाय तो पुनः धर्म धारण करने हेतु अनंतों भवों के बाद ही अवसर मिल पाता है।अतः श्रावकों को अपने जीवन में छः आवश्यकों को अवश्य ही धारण कर जीवन सफल बना लेना चाहिए। परम पूज्य उपाध्याय ऊर्जयन्त सागर जी महाराज ने बताया कि आज जैन समाज में धर्म के क्षेत्र में दिखावा ज्यादा हो गया है। श्रावक अपने कर्तव्यों से विमुख हो रहे हैं। समाज, राजनीति, जनसंख्या, सदाचार, शाकाहार, आर्थिक और सांस्कृतिक क्षेत्रों में निरन्तर समाज नीचे गिरती जा रही है। इसके सुधार हेतु समाज की वर्तमान में पेंसठ से भी अधिक संस्थाएं होने के बाबजूद भी धर्म, धार्मिक स्थल और धर्मात्माओं का संरक्षण और संवर्धन हो ही नहीं पा रहा है। वर-इनमें निरन्तर गिरावट समाज के लिए चिंतनीय विषय बनती जा रही है। उक्त परिस्थितियों के रहते हुए भी सामाजिक संस्थाएं अपने कार्यकताओं और कार्य प्रणाली में आमूलचूल परिवर्तन करने के लिए सुझाव दिए। साथ ही उन्होंने बताया कि महासमिति का गठन जिन उद्देश्यों को लेकर किया गया था, आज वह अपने लक्ष्यों को साधने में असफल हो रही है। अंत में उपाध्याय श्री ने बताया कि सात व्यसनों और पांच पापों से बचने का प्रयास श्रावक को अवश्य करते रहना चाहिए। इस अवसर पर केन्द्रीय महामंत्री सुरेन्द्र कुमार पाण्डया, विशिष्ट अतिथि के रूप में राजस्थान अंचल के अध्यक्ष अनिल कुमार जैन सभाध्यक्ष के रूप में भूत पूर्व अध्यक्ष उत्तम चंद पाण्डया, कार्याध्यक्ष डॉ णमोकार जी, धार्मिक क्षेत्र के राष्ट्रीय निदेशक डॉ भाग चंद जैन, सुरेश जी बांदीकुई, रूपेन्द्र छाबड़ा उपाध्यक्ष एवं अन्य समस्त पदाधिकारियों ने अतिथियों के रूप में अपनी उपस्थित देकर संगोष्ठी को सफल बनाया। इस अवसर पर जयपुर के समस्त संभागों

के अध्यक्ष और मंत्री गणों ने अपनी शिरकत की। श्रीमती शकुन्तला विन्दायका महिला अध्यक्ष राजस्थान अंचल एवं संभागीय महिला अध्यक्षों ने भी अपनी सादर उपस्थिति दर्ज कराई। संगोष्ठी का संचालन , श्रावकाचार बर्ष 2024 के मुख्य संयोजक कैलाश चंद जैन मलैया ने किया। अध्यक्षीय उद्बोधन में अनिल कुमार जैन ने बताया कि उपाध्याय श्री के आशीर्वाद एवं मार्गदर्शन से महासमिति अपने कार्य कलापों में आवश्यक सुधार अवश्य करेगा। और वर्ष 2025 को दिगम्बर जैन महासमिति राजस्थान अंचल ''जैन संस्कृति संरक्षण वर्ष'' के रूप में मनाने जा रही है। अंत में राजस्थान अंचल के महामंत्री महावीर जैन बाकलीवाल ने आभार व्यक्त करते हुए सर्व प्रथम उपाध्याय श्री के आशीर्वाद एवं मार्गदर्शन की सराहना की, समस्त आगंतुक अतिथियों, प्रतापनगर इकाई 8 और समाज का बहुत बहुत आभार व्यक्त किया। अंत में जिनवाणी स्तुति एवं शांति पाठ कर सभा विसर्जित की गई।

गुरुमां विज्ञाश्री माताजी की कठिन तपस्या की खूब-खूब अनुमोदना

गुन्सी, निवाई. शाबाश इंडिया

श्री दिगंबर जैन अतिशय क्षेत्र सहस्त्रकूट विज्ञातीर्थ गुन्सी जिला टोंक राजस्थान में विराजमान परम पूज्य भारत गौरव श्रमणी गणिनी आर्यिका गुरुमां 105 विज्ञाश्री माताजी ससंघ सान्निध्य में आज की शांतिधारा करने का सौभाग्य चातुर्मास संयोजक परिवार विनोद शिवाड़ वाले जयपुर सपरिवार को प्राप्त हुआ। पूजा माताजी ने श्रद्धालुओं को संबोधित करते हुए कहा कि वास्तविकता में धर्म समाज को एकता में बांधने का सूत्र है। परन्तु आज का मानव धर्म के नाम पर अपनी कषायों को पल्लवित करना चाहता है। धर्म का आधार लेकर मैं और मेरा पद के अलावा सबको तुच्छ समझने की भूल करता है। यही भूल उसे संसार में भटका रही है। पूज्य गुरुमां का आज अनशन व्रत है। अनाज का त्याग पूर्वक एक आहार एक उपवास की कठिन तपस्या पूज्य गुरुमां के द्वारा अष्टान्हिका पर्व में चल रही है। उनकी तपस्या को शत-शत बार नमन।

आपके विचार

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक एवं सम्पादक राकेश जैन गोदिका द्वारा प्रकाशित दैनिक-ईपेपर 'शाबाश इंडिया' आम पाठक और समाज में जागरूकता फैलाने में सेतू का काम कर रहा है। आप अपने क्षेत्र के समाचार, आलेख, विचार आदि ई-मेल कर सकते हैं या निम्न नंबरों पर वाट्सअप कर सकते हैं।

सम्पादकः राकेश जैन गोदिका
@ 94140 78380, 92140 78380

दैनिक ई-पेपर
शाबाश इंडिया
shabaasindia@gmail.com
weeklyshabaas@gmail.com

पीछी जैन साधु का ब्रह्मास्त्र है: आचार्य गुप्तिनन्दी

श्री धर्मतीर्थ क्षेत्र पर परम पूज्य प्रज्ञायोगी दिगम्बर जैनाचार्य श्री गुप्तिनन्दी गुरुदेव ससंघ का भव्य पीछी परिवर्तन, वषायोग मंगल कलश निष्ठापन, एवं दीक्षार्थियों का अभिनंदन गोदभराई महोत्सव धूमधाम से सम्पन्न हुआ। सर्वप्रथम ब्र.अलका दीदी व ब्र.जनक दीदी के द्वारा मंगलाचरण प्रस्तुत किया गया।तदुपरांत चारों दीक्षार्थी, मुख्य कलश व पीछी प्रदानकर्त्ता और महाप्रसादी वाहन सौजन्य दाता परिवारों के द्वारा दीप प्रज्वलन किया गया । नागपुर, छ.संभाजीनगर, इंदौर, पाचोड गेवराई, बीड अडूल, लासुर स्टेशन से आये भक्तों ने प्रभु व गुरुचरणों में पुष्पांजलि अर्पित की और अपने अपने शहर में आचार्य श्री संघ को आने का निमंत्रण दिया। इस अवसर पर आचार्य श्री के पाद प्रक्षालन का सौभाग्य दीक्षार्थी ब्र. निर्मल भैया, ब्र. अनुपम भैया, ब्र.अलका दीदी, ब्र.जनक दीदी ने प्राप्त किया। आचार्य श्री की पूजन चारों दीक्षार्थी के साथ लासुर स्टेशन महिला मंडल ने बडे धूमधाम से संपन्न की। आचार्य श्री को पीछी भेंट करने का सौभाग्य श्रीमती प्रेमलता माणकचंद, महेश नमिता, दर्पक हार्दिक परिवार रामगंजमंडी को प्राप्त हुआ । कमण्डल भेंट सुमेरचंद राजकुमारी, अतुल वर्षा जैन(नागौर) परिवार ने किया ।वहीं शास्त्र भेंट संजय सीमा गोम्मटेश खबडे परिवार देवलगाँवराजा और माला भेंट श्री कपिल ज्योति जैन कोटा ने किया। चातुर्मास का प्रमुख मंगल कलश लेने का सौभाग्य श्री विजेन्दर श्रीमती निर्मल, आदित्य, जितेंद्र शीतल मनोज जैन परिवार गुरुग्राम को प्राप्त हुआ ।धर्मतीर्थ कलश क्षेत्र के महामंत्री वास्तु शास्त्री श्री पवनकुमार सौ.सुरेखा, संजोग शिप्रा, मीत मिताली पापडीवाल परिवार छ.संभाजीनगर ने प्राप्त किया। महालक्ष्मी कलश सौ रेखा प्रमोदकुमार अग्रवाल परिवार बाराबंकी परिवार, गुरुसेवा कलश क्षेत्र के उपाध्यक्ष वास्तु विद श्री राजेन्द्र-सौ.वंदना, भूषण प्रिया, नव्या दर्श पाटनी परिवार ने व इनके साथ और भी अनेक परिवारों ने अनेक प्रकार के मंगल कलश प्राप्त किए। मुनि श्री विमलगुप्तजी को पीछी श्री प्रदीप जैन परिवार नी प्रदान की।गणिनी आर्यिका श्री आस्थाश्री माताजी को पीछी सौ श्रद्धा गणेश परिवार ने प्रदान की। क्षुल्लक श्री शांतिगुप्त जी को श्री अनिल ज्योति जैन परिवार इंदौर ने पीछी भेंट की। जालना से श्री रमेश सौ.सुमित्रा, आशीष अर्चना, अमर प्रिया, अमोल मोनिका साहुजी नेमिराज जैन परिवार ने क्षुल्लिका धन्यश्री माताजी को पीछी प्रदान की। इसके अलावा अन्य अनेकों भक्त परिवारों के द्वारा संघस्थ मुनि, आर्यिका, क्षुल्लक, क्षुल्लिका व त्यागी जनों शास्त्र कमंडल व वस्त्र प्रदान किए गए। इस अवसर पर श्री नन्दलाल सौ.शकुंतला, राजेन्द्र सन्मति, नीलेश अर्पिता, कु.रितिका, नैना, आस्था, वंश,अर्णव ठोले परिवार आस्था कैटरर्स ने महाप्रसादी का आयोजन किया। वाहन सौजन्य श्री पारस नीता पांडे परिवार देवगांव रंगारी ने प्रदान किया।मंच संचालन धर्मतीर्थ विकास समिति के प्रवक्ता श्री नितिन नखाते नागपुर व सिद्धचक्र विधान के सौधर्म इंद्र अरुण पाटनी जी ने किया। मंच पर आचार्य श्री के साथ,मुनि श्री विमलगुप्तजी, गणिनी आर्यिका श्री आस्थाश्री माताजी, क्षुल्लक शान्तिगुप्त जी,क्षुल्लिका धन्यश्री, क्षुल्लिका तीर्थश्री,ब्र.निर्मल भैया, ब्र.अनुपम भैया, ब्र.अलका दीदी,ब्र जनक दीदी आदि विराजमान थे ।इस अवसर पर श्री शेखर धनावत, अनिल गोधा, श्री सुनील पाटनी, ललित पाटनी, नितिन नखाते, त्र्यम्बक तुपे, जितेन्द्र पहाडे, नवीन पाटनी, दिलीप शिवणकर, प्रमोद राखे, राजेश जैन, विलास आग्रेकर आदि अनेकों गणमान्य भक्तों का धर्मतीर्थ क्षेत्र की ओर से विशेष स्वागत किया गया। इस अवसर पर अपनी मङ्गल वाणी में पीछी व कलश का महत्व समझाते हुए आचार्य ने कहा मंगल कलश में सम्पूर्ण चातुर्मासिक साधना सार समाहित होता है। मंगल कलश जिस घर में विराजमान होता है वहां सदा मंगल ही मंगल होता है। पीछी जैन साधु का ब्रह्मास्त्र है। जैसे कोई योद्धा ब्रह्मास्त्र से सभी शत्रुओं को जीत लेता है वैसे ही पीछी रूपी ब्रह्मास्त्र से जैन साधक कर्म रूपी शत्रुओं पर विजय प्राप्त करते हैं। पीछी के बिना जैन मुनि व आर्यिका सात कदम से आगे नहीं जा सकते । जैन मुनियों के हाथ की पीछी हर एक श्रावक के घर में होना चाहिये। हमें यह कामना करना चाहिए कि जब भी अपने जीवन का अंत हो उससे पहले मन सन्त हो। घर में रखी पीछी गुरु की याद दिलाती है जो सदा गुरु को याद करता है उसके ही मन में दया समाती है। घर में रखी पीछी अनेक अमंगल दूर करती है। पीछी अपने घर के ईशान कोण में काँच के बाक्स में रखना चाहिए। कलश निष्ठापन व पीछी परिवर्तन के इस महोत्सव में गुरुसंघ का आशीर्वाद पाने हेतु छ.संभाजीनगर, नागपुर, इंदौर, बाराबंकी, दिल्ली, मुंबई, हैदराबाद, फलटण, कचनेर, पैठण, ढोरकिन, जालना, देवलगाँवराजा, अडूल, अम्बड़, बीड, पाँचोड, गेवराई कन्नड़ नासिक धुले, लासुर स्टेशन,सहित सम्पूर्ण मराठवाड़ा, विदर्भ, खानदेश व दिल्ली, बड़ौत, रोहतक, फरीदाबाद, पानीपत हरियाणा उत्तरप्रदेश के अनेकों भक्त उपस्थित थे । इस महोत्सव को सफल बनाने में अध्यक्ष श्री चन्द्रशेखर जी पाटनी के साथ, मार्गदर्शक श्री सुनील जी काला, महामंत्री श्री पवनकुमार जी पापडीवाल, उपाध्यक्ष श्री राजेन्द्र जी पाटनी, गुलाबचंद जी कासलीवाल, धीरज पाटनी, नितिन गांधी, नितिन नखाते,राजेश जैन केबल, आनन्द जैन रमणलाल साहुजी आदि भक्तों समिति के सदस्यों ने विशेष परिश्रम किया।इस अवसर पर आचार्य श्री ने धर्मतीर्थ विकास समिति के उपस्थित सभी सदस्यों को व अन्य भक्तों को विशेष आशीर्वाद दिया। धर्मतीर्थ विकास समिति के अध्यक्ष आर्किटेक्ट श्री चन्द्रशेखर पाटनी जी ने सभा के अंत मे सभी का आभार व्यक्त किया। धर्मतीर्थ के प्रवक्ता श्री नितिन नखाते ने बताया-आचार्य श्री गुप्तिनंदी जी गुरुदेव ससंघ का अगले रविवार 17नवंबर को धर्मतीर्थ क्षेत्र से नवग्रह तीर्थ वरूर की ओर विहार होगा। जहाँ आचार्य श्री 19 जनवरी को वरुर के ऐतिहासिक पँचकल्याणक में ब्र.निर्मल भैया को मुनिदीक्षा प्रदान करेंगे। राष्ट्र संत आचार्य श्री गुणधरनंदीजी के सान्निध्य में आयोजित अंतर्राष्ट्रीय स्तर के पँचकल्याणक में जगद्गुरू भारत गौरव गणाधिपति गणधराचार्य श्री कुन्थुसागरजी गुरुदेव के और उनके शिष्य आचार्य संघों के एकसाथ दर्शन मिलेंगे। हम सभी भक्त मिलकर आचार्य श्री का धर्मतीर्थ से नवग्रह तीर्थ का विहार धूमधाम से करायेंगे।

नरेंद्र अजमेरा पियुष कासलीवाल औरंगाबाद

क्रोध का अंत पश्चाताप से होता है: आचार्य शशांक सागर

श्री सिद्ध चक्र विधान में चढ़ेंगे 256 अर्घ

जयपुर. शाबाश इंडिया। वरूण पथ मानसरोवर स्थित श्री दिगंबर जैन मंदिर में अष्ठानिका के पंचम दिवस पर नित्य अभिषेक एवं शांति धारा के साथ भगवान महावीर के चित्र का अनावरण विधान के ब्रह्म इंद्र विजय -किरण बाकलीवाल, दीप प्रज्ज्वलन बसंत-बीना बाकलीवाल, पाद प्रक्षालन निर्मल, भंवरी काला ने किया। सौधर्म इन्द्र सुनील-अनिता गंगवाल ने बताया कि आचार्य शशांक सागर महाराज ने प्रवचन ने बताया कि क्रोध पागलपन से पैदा होता है और इसका अंत पश्चात्ताप से होता है। इसके लिए क्षमा माँगने में कोई शर्म ना करें। प्रतिष्ठाचार्य प्रद्युम्न शास्त्री ने बताया कि विधान के पंचम दिवस में 128 अर्घ अर्पण किया और षष्ठम दिवस में 256 अर्घ चढ़ेंगे , सांय आरती के साथ भक्ति संध्या का आयोजन होगा। इस अवसर पर एम पी जैन,पूरण मल अनोपड़ा, कैलाश सेठी, राजेन्द्र सोनी, सुनील गोधा, महावीर बडजात्या, संतोष कासलीवाल,लोकेश सोगानी, जैनेन्द्र जैन, जे के जैन आदि उपस्थित रहे। **-सुनील जैन गंगवाल**

बद्रीनाथ अहिंसा संस्कार पदयात्रा, विहार अपडेट

भारत गौरव साधना महोदधि सिंह निष्क्रिड़ित व्रत कर्ता अन्तर्मना आचार्य श्री 108 प्रसन्न सागर जी महाराज एवं सौम्यमूर्ति उपाध्याय 108 श्री पीयूष सागर जी महाराज ससंघ का पदविहार ग्राम सिकंदरपुर जिला निजामबाद से तेलंगाना फंक्शन हॉल मैत्री गार्डन ग्राम ममेडपल्ली अरमौर रोड नियर भारत पेट्रोल पंप जिला निजामाबाद तेलंगाना स्टेट दुरी-10.05 के लिए होगा।

अन्तर्मना आचार्य प्रसन्न सागरजी महाराज कुलचाराम से बद्रीनाथ अहिंसा संस्कार पदयात्रा से

ज़िन्दगी खुश होकर जीने में है..
सम्बन्धों में शक कर जीने में नहीं..!

सम्बन्धों में शक उस अमर बेल की तरह है जो सम्बन्धों को भीतर से खोखला कर देता है। एक नव विवाहित दम्पत्ति का आपस में बहुत प्रगाढ़ प्रेम था। उनका आपसी प्रेम बर्ताव कॉलोनी में एक आदर्श था। पति पत्नी हो तो उन जैसे हो। पति किसी कम्पनी में जोब करता था। पत्नी भी जोब खोज रही थी, उसे एक स्टेट की साहिबा के यहाँ सचिव की जोब मिल गई। दोनों पति पत्नी आपस में सुख आनंद का जीवन बिताने लगे। वक्त बीतने लगा। कुछ समय बाद किसी ने कहा - तुम्हारी पत्नी तुमसे छल करती है, तुमसे कुछ छुपा रही है। उसके मन में सन्देह का कीड़ा प्रवेश कर गया। क्या मेरी पत्नी मुझसे निश्छल प्रेम करती है-? वह पत्नी के हरेक काम पर नजर रखने लगा। और वह पाता है कि घर की तिजोरी की चाबी वह छुपाकर रखती है। एक दिन वह चाबी पति के हाथ लग जाती है। वह तिजोरी खोलता है, उसमें एक लाल कपड़े में लपेटे हुये सैकड़ों प्रेम पत्र उसे मिलते हैं। वह तेजी से उन सभी पत्रों को पढ़कर वापिस वैसे ही रख देता है। उन पत्रों में ना नाम, ना पता, सम्बोधन भी कोड में होता है। वह रात्रि को पत्नी का गला दबाकर हत्या कर देता है। कॉलोनी में किसी को शक भी नहीं होता। उनका प्रेम तो एक उदाहरण था सबके लिए। कुछ दिनों बाद साहिबा मिलने के लिए आती है और कहती है - आपकी पत्नी बहुत इमानदार और एक महान आत्मा थी। मैंने अपने कुछ गोपनीय पत्र सुरक्षित रखने को दिये थे। वह एक लाल कपड़े में बंधे है और तिजोरी में रखने की बात हमसे कही थी। पति कांपते हुये हाथों से पत्रों की वह पोटली लाता है। उसे देख रानी साहिबा चिल्ला पड़ती है - हां हां यही मेरी अमानत है। जिसे हम दुनिया कहते हैं, वह सम्बन्धों का एक सुन्दर मायाजाल है। यह सम्बन्ध सिर्फ विश्वास के कमजोर धागों से ही टीके होते हैं। एक सन्देह ने दोनों की जीवन लीला को खत्म कर दिया। आपसी विश्वास यदि हमारा स्वभाव बन जाये, तो संसार में सब कुछ अच्छा लगने लगे।

-नरेंद्र अजमेरा, पियुष कासलीवाल

नारी मे इच्छा शक्ति जाग्रत हो जाए तो वह बुलंदियों को छू सकती है : साध्वी प्रितीसुधा म.

उदयपुर. शाबाश इंडिया। नारी में अगर इच्छा शक्ति जागृत हो जाए तो वह किसी भी चुनौती का सामना कर सकती है और बुलंदियों को छू सकती है। उसकी दृढ़ता, साहस और संकल्प से वह समाज में बदलाव लाने की शक्ति रखती है। मंगलवार पंचायती नोहरा जैन स्थानक मे पंच दिवसीय कार्यक्रम के दुसरें दिन एकासन एवं महिला स्थापना दिवस पर साध्वी प्रिती सुधा ने धर्मसभा को सम्बोधित करतें हुए कहा कि खाना पीना मौज मस्ती करना ही जीवन का उदेश्य नहीं है।आज दुनिया मे नारी पुरूषों के बराबर कंधे से कंधा मिलाकर हर क्षैत्र में आगे बढ़ रही है। फिर भी उसके जीवन मे सुख और शांति नहीं है। भौतिक सुविधाएं बहुत हैं, लेकिन इसके बावजूद मन की शांति नहीं है। धन-दौलत से संसाधन खरीदे जा सकते हैं, लेकिन शांति नहीं खरीदी जा सकती है। शांति बाजार में बिकने वाली वस्तु नहीं है। केवल मुख से चुप रहने से शांति नहीं मिलती है दुखः का कारण ही व्यक्ति का मन है। जब तक मन शांत नहीं रहेगा ,तब तक जीवन मे सुख नहीं मिलने वाली है धर्म साधना मे संलग्न रहने पर ही जीवन में शांति ओर बुलंदी पाई जा सकती है। श्रावक संघ अध्यक्ष सुरेश नागौरी ने बताया की स्थापना दिवस समाज सेवा मे योगदान देने वाली महिलाओं का सम्मानित किया गया। इसदौरान धर्मसभा में महामंत्री रोशनलाल जैन,राजेन्द्र खोखावत दिनेश हिंगड़, महिला मंडल की मंजू सिरोया, संतोष जैन पुष्पा खोखावत आदि पदाधिकारियों के अलावा सैकड़ों श्रावक श्राविकाओं की उपस्थित रही एवं साध्वी हर्ष प्रभा का सानिध्य भी मिला।

सिद्ध चक्र महामंडल विधान में आज अंतिम दिन नव निर्मित दरवाजे का हुआ लोकार्पण

परम पूज्य मुनि 108 सुयश सागर जी का मंगल आशीर्वाद मिला

झुमरीतिलैया. शाबाश इंडिया

जिसके दर्शन से जीवन सफल हो जाता है ऐसी परमपूज्य जैन संत मुनि श्री 108 सुयश सागर जी मुनिराज जी के मंगल आशीर्वाद से 1008 सिद्धचक्र महामंडल विधान ओर विश्व शान्ति महायज्ञ का आज अंतिम दिन 1008 आदिनाथ भगवान का सभी इन्द्र गण के साथ सेकड़ो लोगो ने अभिषेक किया ओर शांतिधारा राकेश-प्रीति छाबड़ा के द्वारा किया गया इसके पश्चात पंडित अभिषेक शास्त्री द्वारा सभी आरंभिक कियार्यों के साथ विधान प्रारंभ हुआ जिसमें आज 1024 अर्ध ओर श्री फल प्रभु के चरणों मे सोधर्म इन्द्र के साथ सभी इन्द्रो के द्वारा मंडप पे चढ़ाया गया।इस विशेष अवसर पर पूज्य मुनि श्री ने अपने मंगल उद्बोधन करते हुये कहा कि सिद्ध चक्र महामंडल विधान अरबपति खरबपति नहीं या पैसे वाले नही कर पाते है ,जो मन के धनी होते हैं जो किस्मत के धनी होते हैं और जिनका पुण्य जोर मारता है वो ही साक्षात भगवान के दरबार मे विधान करा पाते है ओर ये कोडरमा समाज का पुण्य का उदय है कि धर्म

नगरी में अनंतानंत सिद्ध परमेष्टि की आराधना की गई। आगे महाराज श्री ने कहा कि जो पाप कर्म तप और त्याग से नही कट सकते हैं वो पाप कर्म सिद्धचक्र विधान विधान करने से कटते है ।अठाई में आठ दिनों तक उपवास करने वाली नीलम सेठी को समाज की ओर से अनुमोदना किया गया और मुनि श्री का आशीर्वाद मिला ।पूजन के पश्चात मुनि श्री गाजे बाजे के साथ नया जैन मंदिर पानी टंकी रोड पहुँचे जहाँ नया मंदिर के नय द्वार के पुण्याजक परिवार प्रदीप-मीरा छाबड़ा ने मुनि श्री का आगवानी कर चरण धोने का सौभाग्य पाया इसके बाद पंडित जी के द्वारा पूजन और मंत्रोचार कर मुनि श्री के मंगल आशीर्वाद से उत्तर मुख दरवाजे का उदघाटन किया गया इस अवसर पर समाज के सभी पदाधिकारियों ने पुण्याजक परिवार प्रदीप-मीरा छाबड़ा,पीयूष-प्रियन्का,राहुल-आरची छाबड़ा,हजारीबाग से आये सुबोध-मनोरमा,सरिया से आये राजेश सेठी आदि को तिलक,माला ओर साफा पहनाकर स्वागत किया,इस शुभ घड़ी में जैन मुनि ने कहा कि उत्तर मुख कुबेर का होता है इससे पूरा समाज और शहर के लिए शुभ है और प्रदीप छाबड़ा परिवार को मेरा बहुत बहुत आशीर्वाद है,इस अवसर पर पुण्याजक परिवार प्रदीप छाबड़ा ने कहा कि ये उत्तर मुखी दरवाजे बनाने का मेरा बहुत दिनों से इक्छा थी जो आज पूज्य गुरुदेव की असीम किरपा से संपन्न हुआ गुरुदेव का मेरे परिवार पर मंगल आशीर्वाद है। संदया में भव्य आरती ललित-आशीष सेठी टेलेंट ग्रुप परिवार और अर्हम ग्रुप के द्वारा किया गया।इसके साथ ही सुबोध गंगवाल, नवादा से आये विजय जैन,जियागंज से आये शुशील जैन ने अपने भजन से सभी को भक्ति में डूबा दिया,इसके पश्चात गुरु मुख से णमोकार चालीसा का पाठ हुवा ।इस विधान में विशेष रूप अनेक श्रद्धालु भक्त शामिल हैं।

-कोडरमा मीडिया प्रभारी
राज कुमार अजमेरा,नवीन जैन

शाश्वत तीर्थराज सम्मेदशिखर जी
धार्मिक यात्रा
14 नवम्बर से 18 नवम्बर 2024

गुरुवार, 14 नवम्बर 2024 को जयपुर से पारसनाथ अजमेर सियालदाह एक्सप्रेस (ट्रेन संख्या : 12988) दोपहर 2.45 बजे

सोमवार, 18 नवम्बर 2024 को पारसनाथ से जयपुर सियालदाह अजमेर एक्सप्रेस (ट्रेन संख्या : 12987) प्रात: 3.50 बजे

यात्रा संक्षिप्त कार्यक्रम :

- 14 नवम्बर को दोपहर 2.45 बजे जयपुर से पारसनाथ के लिए प्रस्थान
- 15 नवम्बर को प्रात: 11 बजे पारसनाथ से कुंद कुंद भवन (मधुबन) के लिए प्रस्थान
- 16 नवम्बर को शाश्वत तीर्थराज सम्मेदशिखर जी की वन्दना
- 17 नवम्बर को प्रात: 10.00 बजे से पूजन विधान
- 17 नवम्बर को सायं 7.15 बजे भक्ति संध्या कुंद कुंद भवन परिसर
- 17 नवम्बर को रात्रि 11.45 बजे मधुबन से पारसनाथ के लिए प्रस्थान
- 18 नवम्बर को प्रात: 3.50 बजे पारसनाथ से जयपुर के लिए वापसी
- 18 नवम्बर को मध्यरात्रि 11.15 बजे जयपुर आगमन

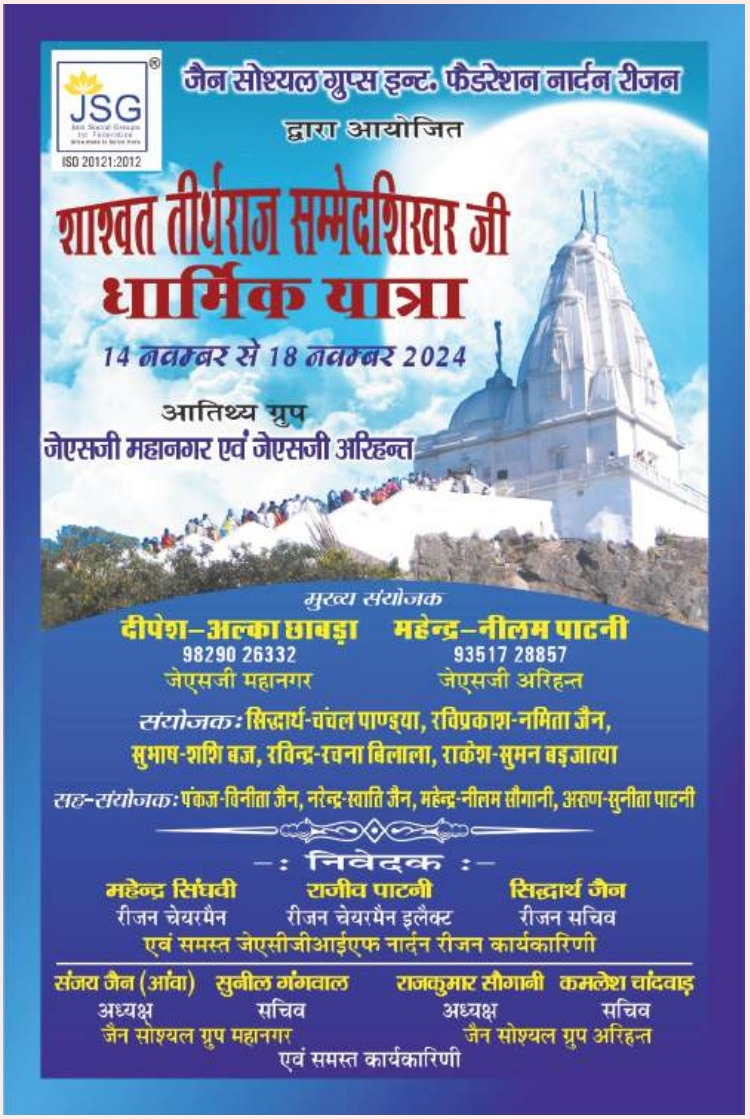

भगवान की भक्ती से श्रेष्ठ दूसरा कोई साधन नहीं: परम पुज्य मुनि श्री प्रमाण सागर जी

राजेश जैन दद्दू. शाबाश इंडिया

इंदौर। मुनि श्री प्रमाण सागर महाराज ने इंदौर के विजयनगर स्थित विजनिस पार्क में संस्कृत भाषा में चल रहे ऐतिहासिक 108 मंडलीय श्री सिद्धचक्र महामंडल विधान के विशाल पांडाल में छंटवे दिवस विशाल जन समूह को सम्बोधित करते हुए कहा प्रातःकालीन धर्म सभा में व्यक्त किये। मुनि श्री ने कहा भगवान की आराधना जीवन की श्रैष्ठतम आराधना है,भक्ती वह क्रिया है जो हमारे हृदय के भावों को विशिष्ट बनाकर हमारी आत्मा को पवित्र बना देती है।अपने मन की मलीनता को दूर करने के लिये भक्ती से श्रैष्ठ और कोई दूसरा साधन नहीं है उन्होंने कहा कि शरीर का मल दूर करने के लिये तो हम साबुन लगाकर जल से शरीर का प्रछालन करते है,लेकिन-मन की मलीनता को दूर करने के लिये भगवान की भक्ती ही हमारे पास एक मात्र सहारा है, अभीआप लोग भक्ती की अथाह गंगा में अवगाहित हो रहे है। मुनि श्री ने कहा कि गंगा में स्नान करने से पाप धुल जाता है,यह तो मुझे पता नहीं लेकिन इतना जरुर है,कि भगवान आपका दोष रहित स्तवन तो बहूत दूर की बात है आपका मात्र नाम स्मरण ही हम सभी के कप्ट पापों को नष्ट कर देता है।सूरज तो बहूत दूर की बात है उसकी किरणें ही अंधेरे को दूर कर देती है, यह हम सभी का सौभाग्य है कि भगवान के नाम स्मरण करने का सामुहिक अवसर हम सब को मिल रहा है,अपने अंदर गाढ़ श्रद्धान रखें और यह मानकर चलें कि हमारे द्वारा बोला गया एक एक मंत्र हमारी आत्मा में लगे असंख्य कर्म पुंजों का क्षय करेगा मुनि श्री ने जैन ग्रंथ धवला का उदाहरण देते हुये कहा कि उसमें लिखा है कि जिनेन्द्र भगवान का दर्शन पूजन अभिषेक करने से बहु कर्म प्रदेशों की निर्जरा होती है, इस समय आपका तीव्र पुण्योदय चल रहा है जो आप सभी को दर्शन पूजन बंदन, और मनन,करने का सौभाग्य मिल रहा है। धर्म समाज प्रचारक राजेश जैन दद्दू ने बताया कि आज मध्यप्रदेश के लोकप्रिय केबिनेट मंत्री जल संसाधन तुलसी राम सिलावट एवं लोकप्रिय विधायक रमेश मेंदोला दादा दयालु भी पधारे और गुरु चरणों में श्रीफल भेंटकर आशीर्वाद प्राप्त किया। धर्म प्रभावना समिति के प्रमुख रानी अशोक डोसी आनंद नवीन गोधा हर्ष जैन, राहुल जैन धर्मेन्द्र जैन आदि सदस्यों ने मंत्री जी का स्वागत सम्मान किया।

लेकसिटी में शार्ड सेंटर फॉर इनोवेशन द्वारा बच्चों को मिलेगी आधुनिक तकनीक कोचिंग

उदयपुर. शाबाश इंडिया

सौ फीट रोड, नोखा स्थित महावीर नगर में मंगलवार को शार्ड सेंटर फॉर इनोवेशन का उद्घाटन वर्धमान विश्वविद्यालय निदेशक डॉ. रश्मि बोहरा ने फीता काटकर किया। इस अवसर पर डॉ. बोहरा ने कहा कि इस प्रकार के कोचिंग सेंटर बच्चों के भविष्य को सुनहरा बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएंगे। सौरभ पांडे ने बताया कि शार्ड सेंटर फॉर इनोवेशन पहले गुजरात में काम कर चुका है, और अब राजस्थान में उदयपुर में अपना पहला सेंटर शुरू किया गया है। यह सेंटर कक्षा 2 से 10 तक के बच्चों को आधुनिक तकनीक, जैसे एआई, रोबोटिक्स, थ्रीडी प्रिंटिंग, ड्रोन टेक्नोलॉजी, और इंटरनेट ऑफ थिंग्स की कोचिंग प्रदान करेगा। जतिन भाई पटेल ने बताया कि यहां बच्चों को सोचने की क्षमता बढ़ाने के साथ-साथ इलेक्ट्रॉनिक कोर्स और स्किल डेवलपमेंट पर भी जोर दिया जाएगा। साथ ही इस सेंटर से बच्चों को सर्टिफिकेट दिया जाएगा, जिससे उनके लिए जॉब के अवसर खुलेंगे। वहीं, रितेश महेता ने प्लेसमेंट सपोर्ट की बात भी की और बताया कि इंडस्ट्री की डिमांड के अनुसार शिक्षा प्रदान की जाएगी।

रिपोर्ट फोटो राकेश शर्मा 'राजदीप'

शीतल गच्छ यश गुरूणी प्रोत्साहन मण्डल का गठन

अहिंसा भवन में महासाध्वी मनोहरकंवरजी म.सा. के सानिध्य में हुई बैठक

भीलवाड़ा. शाबाश इंडिया

शीतलगच्छ परम्परा की श्राविकाओं के एकजुट होकर संघ समाज के हित में कार्य करने की भावना से शीतल गच्छ यश गुरूणी प्रोत्साहन मण्डल का गठन किया गया है। इस मण्डल गठन का निर्णय मंगलवार को शास्त्रीनगर स्थित अहिंसा भवन में विराजित शासन प्रभाविका राजस्थान प्रवर्तिनी परम पूज्य गुरूणी मैया श्री यशकंवरजी म.सा. की सुशिष्या पोरवाल चन्द्रिका महासाध्वी पूज्य मनोहरकंवरजी म.सा. एवं साध्वी श्री ज्योतिप्रभाजी म.सा. के सानिध्य एवं मार्गदर्शन में शीतलगच्छ परम्परा की श्राविकाओं की बैठक में किया गया। बैठक में चर्चा के दौरान सामने आया कि मेवाड़ क्षेत्र में जिनशासन को आगे बढ़ाने वाले युग प्रधान आचार्य शीतलदासजी म.सा. आदि महान गुरू भगवन्त हुए लेकिन आज उन्हीं के गुणों की संयम सौरभ,ज्ञान दर्शन चरित्र तप से हम अनभिज्ञ हो रहे है। ऐसे महान संतो के गुणों से हम परिचित हो सके ओर उनके आर्दशों को जीवन में अंगीकार कर सके इसी लक्ष्य से पूज्य गुरू श्री वेणीचंदजी म.सा. एवं पूज्य गुरूणी यशकंवरजी म.सा. की पावन कृपा से शीतल गच्छ गुरूणी प्रोत्साहन मण्डल का गठन किया गया। साध्वीश्री ने मण्डल गठन पर प्रसन्नता व्यक्त करते हुए इसकी सफलता की मंगलकामना करते हुए आशीर्वाद प्रदान किया। मण्डल गठन के बाद सम्प्रदाय व समाज हित में किस तरह बेहतर कार्य हो सकता इस बारे में मंजू पोखरना, उमा आंचलिया, नीता बाबेल, मंजू सिंघवी, शकुन्तला खमेसरा, हेमलता खेराड़ा, निकिता बंब, रश्मि लोढ़ा, रेखा नानेचा, रजनी सिंघवी, मंजू बापना आदि ने विचार व्यक्त करते हुए कई सुझाव भी दिए। मण्डल की अगली बैठक 30 नवम्बर को यश विहार में सुबह 11 बजे से रखने का निर्णय हुआ। बैठक के बाद गौतम प्रसादी के लाभार्थी हेमंत आंचलिया एवं अशोक पोखरना रहे। बैठक में शीतल गच्छ परम्परा की 70 से अधिक श्राविकाएं शामिल हुई।

खाटू धाम पहुंचे लाखों भक्त

सीकर की खाटू नगरी में विराजे बाबा श्याम का मंगलवार को जन्मोत्सव था। पिछले 36 घंटे में देश-दुनिया से लाखों भक्त दर्शन कर चुके हैं। मंगलवार शाम को विशेष प्रकार का 56 भोग बाबा को अर्पण किया गया। मंदिर परिसर को ग्रीन और गोल्डन थीम पर सजाया गया है। कोलकाता के फूलों के 30 कारीगरों ने मंदिर के भीतर अलग-अलग डिजाइन तैयार किए हैं। जन्मोत्सव के मौके पर श्रद्धालुओं का पहुंचना एक दिन पहले ही शुरू हो गया था। सोमवार रातभर खाटूनगरी बाबा के जयकारों से गूंजती रही। खाटू के तोरण द्वार पर देर रात करीब दो घंटे तक आतिशबाजी भी की गई। हालांकि, मंदिर कमेटी ने भक्तों से आतिशबाजी नहीं करने की अपील की है। वहीं, बाबा के दर्शनों के लिए देर रात से भक्त लाइनों में लगे हैं। बाबा को जन्मोत्सव की बधाई देने के लिए कई श्रद्धालु मावे का केक भी बनाकर लाए हैं। खाटूश्याम मंदिर के मुख्य द्वार को श्रीनाथजी की थीम पर सजाया गया है। मंदिर प्रशासन ने भक्तों की भीड़ को देखते हुए विशेष इंतजाम किए हैं। दर्शनों के लिए कुल 14 लाइन चालू हैं, जिसमें 10 लाइन तो 75 फीट ग्राउंड से सीधे मंदिर की तरफ लाती हैं। अन्य 4 लाइन मंदिर के मुख्य द्वार की तरफ से हैं।

बगदा में विशाल घटयात्रा एवं रथयात्रा के साथ शुरू हुआ छह दिवसीय चौबीसी मानस्तंभ प्रतिष्ठा पंचकल्याणक महोत्सव

आगरा. शाबाश इंडिया। आगरा के शमशाबाद रोड स्थित बरौली अहीर के श्री चंद्रप्रभु दिगंबर जैन मंदिर बगदा में छह दिवसीय श्री मजिनेंद्र चंद्रप्रभु जिनविंब पंचकल्याणक प्रतिष्ठा एवं चौबीसी मानस्तंभ महामहोत्सव का शुभारंभ 12 नवंबर को विशाल घटयात्रा एवं रथयात्रा के साथ हुआ। गर्भकल्याणक पूर्वरूप के पहले दिन मेडिटेशन गुरु उपाध्यायश्री विहसंत सागर जी महाराज ससंघ के मंगल सानिध्य में राहुल विहार स्थित श्री पार्श्वनाथ दिगंबर जैन मंदिर से पंचकल्याणक महोत्सव की घटयात्रा एवं रथयात्रा सुबहः8:00 बजे निकाली गई। जिसका शुभारंभ प्रदीप जैन पीएनसी परिवार ने हरी झंडी दिखाकर रवाना कियो घटयात्रा में बड़ी संख्या में महिलाएं केसरिया साड़ियों में मांगलिक द्रव्य से भरे मंगल कलश रखकर चल रही थीं,वही भक्त श्रीजी की प्रतिमा को रथ में विराजमान कर उपाध्यायश्री ससंघ के साथ जयकारें लगाते हुए चल रहे थे। घटयात्रा में भगवान के माता-पिता, सौधर्म इंद्र,कुबेर इंद्र,महायज्ञ नायक, यज्ञनायक,ईशान इंद्र,सानत इंद्र,महेंद्र इंद्र,ब्रह्म इंद्र,ब्रह्ममोतर इंद्र,लांतव, कापिषठ इंद्र,शुक इंद्र,महाशुक इंद्र, शतार इंद्र,स्वरूप बग्घियों में सवार थे। इसके अलावा अष्टकुमारी,आठ लोकांतिक देव,दस अखंड सौभाग्यवती,56 कुमारिया और बाल सखा झांकियां में सवार थे। घटयात्रा एवं रथयात्रा में एक रथ,किशोर बैंड कमल बैंड,करन बैंड,सुधीत बैंड, चौबीस बागी और साथ में ढोल नगाड़े आठ झांकियां कई घोड़े ऊंट आकर्षण का केंद्र रहेइस घटयात्रा एवं रथयात्रा की व्यवस्था नमोस्तु शासन संघ छीपीटोला एवं आचार्य विद्यासागर नवयुवक मंडल राहुल विहार द्वारा देखी गईं घटयात्रा एवं श्रीजी रथयात्रा राहुल विहार जैन मंदिर से शुरू होकर विभिन्न मार्गो से होती हुई आर.पी.जैन कृषि फार्म हाउस बगदा में बने मुख्य पंडाल पर पहुंची।जहां ध्वजारोहण हीरालाल बैनाड़ा परिवार एवं निर्मल कुमार मोठ्या परिवार द्वारा पंडाल का उद्घाटन हीरालाल बैनाड़ा बीना बैनाड़ा परिवार एवं निर्मल कुमार मोठ्या एवं उमा मौठ्या परिवार द्वारा किया गया,साथ ही भगवान चंद्रप्रभु के चित्र का अनावरण एवं दीप प्रज्ज्वलन सौभाग्यशाली भक्तों द्वारा किया गया। इस दौरान पंचकल्याणक महोत्सव समिति एवं बाहर से पधारे भक्तों ने उपाध्यायश्री के समक्ष श्रीफल भेंटकर मंगल आशीर्वाद प्राप्त कियोइसके बाद दोपहर 1:00 बजे से पंचकल्याणक महोत्सव में बने सभी पात्रों के इंद्र इंद्राणियों ने उपाध्यायश्री विहसंत सागर जी महाराज ससंघ के सानिध्य एवं युगल प्रतिष्ठाचार्य डॉ अभिषेक जैन शास्त्री एवं डॉ आशीष जैन के निर्देशन में सकलीकरण इंद्र प्रतिष्ठा नदी विधान,मंडपप्रतिष्ठा, मंडलोंद्वार, जाप अनुष्ठान,श्रीजी का अभिषेक, शांतिधारा, यागमंडल विधान एवं सभी मांगलिक क्रियाएं संपन्न कीं। कार्यक्रम के मध्य में उपाध्यायश्री विहसंतसागर ने भक्तों को संबोधित करते हुए कहा कि पंचकल्याणक भगवान बनने की प्रक्रिया है।जिसमें पाषाण मंत्रों से परमात्मा बन जाते हैं।सांय 7:00 से श्रीजी की मंगल आरती, शास्त्रसभा सौधर्म इंद्र की सभा,अलंकरण रत्नवृद्धि एवं गर्भकल्याण की आंतरिक क्रियाएं संपन्न की गई। कार्यक्रम का संचालन मनोज जैन बाकलीवाल एवं सत्येंद्र जैन साहू द्वारा किया गया। इस अवसर पर गौरव अध्यक्ष प्रदीप जैन पीएनसी, प्रदीप जैन सीए,सुधीर जैन,मनोज जैन बाकलीवाल,अनंत कुमार जैन, जगदीशप्रसाद जैन,सुनील जैन ठेकेदार,राकेश जैन पदेर्वाले,आशु जैन बाबा,लोकचंद जैन,मनोज जैन बल्लो, राजेश जैन,संजय जैन,अभिनव जैन, राजेश जैन कारपेट वाले,सुजीत जैनअनिल जैन मीडिया प्रभारी शुभम जैन,राहुल जैन,उषा मार्शल्स,वंदना जैन,नगीना जैन,अनीता जैन,तरन जैन,रेनू जैन,सुमन जैन,नीलम जैन, समस्त आगरा की विभिन्न शैलियों के लोग बड़ी संख्या में उपस्थित रहे। मीडिया प्रभारी शुभम जैन ने बताया कि 13 नवंबर को सुबहः 7:00 बजे से पंचकल्याणक महोत्सव में गर्भ कल्याणक उत्तररूप क्रियाओं में श्रीजी का अभिषेक, शांतिधारा एवं पूजन,उपाध्यायश्री के मंगल प्रवचन और माता-पिता की गोद भराई की क्रियाएं होंगी। रात में श्रीजी की मंगल आरती एवं 56 कुमारियों द्वारा माता की सेवा, माता का अगमन एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम होंगे।

जीवन में जीवो और जीने दो के संदेश को हमें चरितार्थ करना है: मुनिश्री 108 पावनसागर जी

जयपुर. शाबाश इंडिया। दुर्गापुरा स्थित श्री दिगम्बर जैन मंदिर चन्द्रप्रभ जी में अष्टान्हिका महापर्व के पावन अवसर पर मंगलवार दिनांक 12 नवंबर को श्री 1008 श्री सिद्धचक्र महामण्डल विधान पूजा में मुनि श्री 108 पावन सागर जी महाराज एवं मुनि श्री 108 सुभद्र सागर जी महाराज ससंघ के सानिध्य में अभिषेक शांतिधारा लान्तव इन्द्र - श्रीमान अरुण कुमार लुहाड़िया एवं शुक्र इन्द्र - श्रीमान अशोक कुमार काला ने की । ट्रस्ट के कोषाध्यक्ष विमल कुमार गंगवाल ने बताया कि विधान पूजा में सम्मिलित सभी इन्द्र इन्द्राणियों ने पूजा के अर्घ्य मण्डल पर चढ़ाये। विधान पूजा के मध्य में मुनिश्री 108 पावनसागर जी ने प्रवचन में बताया कि जीवन में जीवो और जीने दो के संदेश को हमें चरितार्थ करना है। परोपकार की भावना आचरण में लाएंगे तभी यह जीवन जीना सार्थक है। क्रोध को वश में करें एवं कषायों में मंदता लाने का प्रयास करें। किसी जीव को मेरे वचनों से कोई दुख न पहुंचे हित मित प्रिय वचन बोले मोह माया से आसक्ति न होगी तो क्रोध पर नियंत्रण कर सकते हैं। राग द्वेष से बचने का प्रयत्न करना चाहिए। मोह माया ममता में आशक्ति से दूर रहें मुनिश्री ने सुकुमाल मुनि का दृष्टांत बतायो अतः यह राग भाव आपको छोड़ना है। भगवान की पूजा भक्ति कर अपने कर्मों की निर्जरा कर पुण्य का अर्जन करें।

श्री आदिनाथ दिगम्बर जैन मन्दिर,
मीरा मार्ग, मानसरोवर, जयपुर
अर्हं ध्यान योग
पावन सानिध्य :
श्रीमद् जिनेन्द्र जिनबिम्ब
पंचकल्याणक
प्रतिष्ठा महामहोत्सव
दिनांक 13 नवम्बर से 17 नवम्बर 2024
स्थान : सामुदायिक केन्द्र से. 9 गोखले मार्ग, मानसरोवर
दिनांक 17 नवम्बर 2024
उपनयन संस्कार प्रातः 8.00 बजे
भव्य पिच्छी परिवर्तन दोपहर 1.00 बजे से
अभीक्ष्ण ज्ञानोपयोगी, अर्हं ध्यान योगप्रणेता,
मुनि श्री 108 प्रणम्यसागर जी महाराज
परम पूज्य मुनि श्री 108 विश्वाक्षसागर जी महाराज
परम पूज्य क्षुल्लक श्री 105 अनुत्तरसागर जी महाराज
परम पूज्य क्षुल्लक श्री 105 सविनयसागर जी महाराज
परम पूज्य क्षुल्लक श्री 105 समन्वयसागर जी महाराज
बुधवार, 13 नवम्बर 2024 गर्भ कल्याणक
प्रातः 6.30 बजे - देवाज्ञा, गुरु आज्ञा, आचार्य निमंत्रण, घट पूजन, घटयात्रा, जुलूस
प्रातः 7.15 बजे - ध्वजारोहण, मण्डप उद्घाटन, मण्डप शुद्धि, अभिषेक, पूजन, सकलीकरण, इन्द्र प्रतिष्ठा, मंडप प्रतिष्ठा, यागमण्डल विधान
प्रातः 9.00 बजे - पूज्य मुनिश्री की मंगल देशना
दोपहर 12.00 बजे - गर्भकल्याणक की आंतरिक क्रियायें
सायं 3.00 बजे - माता की गोद भराई
सायं 4.00 बजे - मुनिश्री का प्रवचन
सायं 6.00 बजे - आचार्य भक्ति, आरती, सौधर्म इन्द्र एवं महाराजा नाभिराय का दरबार सांस्कृतिक कार्यक्रम
गुरुवार, 14 नवम्बर 2024 जन्म कल्याणक
प्रातः 6.30 बजे - अभिषेक, शांतिधारा, पूजन, यज्ञ
प्रातः 7.30 बजे - भगवान के जन्मोत्सव की बधाई, प्रथम दर्शन शचि द्वारा, सहस्र नेत्र बनाकर प्रभु दर्शन, सौधर्म इन्द्र द्वारा प्रवचन, जन्म कल्याणक जुलूस, पाण्डुक शिला पर जन्माभिषेक, तीर्थंकर बालक का शृंगार, नामकरण
सायं 6.00 बजे - आचार्य भक्ति, आरती, शास्त्र सभा सौधर्म इन्द्र द्वारा ताण्डव नृत्य, पालना झूलना और बाल क्रीड़ा
शुक्रवार, 15 नवम्बर 2024 तप कल्याणक
प्रातः 6.30 बजे - अभिषेक, शांतिधारा, पूजन, यज्ञ
प्रातः 8.30 बजे - प्रवचन
दोपहर 1.00 बजे - पाणिग्रहण संस्कार, राज्य तिलक, भेंट समर्पण, असि आदि षट्कर्म, शिक्षा नीति, नीलांजना नृत्य, वैराग्य, दीक्षाभिषेक, वनगमन, दीक्षा संस्कार विधि (मुनिश्री द्वारा)
सायं 6.00 बजे - आचार्य भक्ति, आरती, शास्त्र सभा सांस्कृतिक कार्यक्रम
शनिवार, 16 नवम्बर 2024 ज्ञान कल्याणक
प्रातः 6.30 बजे - अभिषेक, शांतिधारा, पूजन, यज्ञ
प्रातः 8.30 बजे - प्रवचन मुनिश्री का
प्रातः 9.00 बजे - महामुनि की प्रथम आहार चर्या
दोपहर 1.00 बजे - ज्ञान कल्याणक की क्रियायें, प्राण-प्रतिष्ठा सूरिमंत्र के साथ समवशरण की रचना, गणधर रूप विराजमान मुनिश्री की देशना एवं पूजन
सायं 6.00 बजे - आचार्य भक्ति, आरती, शास्त्र सभा सांस्कृतिक कार्यक्रम
रविवार, 17 नवम्बर 2024 मोक्ष कल्याणक
प्रातः 6.30 बजे - अभिषेक, शांतिधारा, पूजन
प्रातः 7.15 बजे - कैलाश पर्वत पर अंतिम दर्शन, मोक्षगमन एवं निर्वाण कल्याणक की पूजन, विश्व शांति महायज्ञ
प्रातः 8.00 बजे - उपनयन संस्कार
प्रातः 9.00 बजे - प्रवचन, जुलूस और श्रीजी विराजमान
दोपहर 1.00 बजे - सम्मान एवं आभार व्यक्त भव्य पिच्छी परिवर्तन
सायं 4.30 बजे - सामूहिक वात्सल्य भोज
प्रतिष्ठाचार्य
पं. धीरज जी शास्त्री
भगवान के माता-पिता
सौधर्म इन्द्र
कुबेर इन्द्र
महा यज्ञनायक
ध्वजारोहणकर्ता
यज्ञनायक
ईशान इन्द्र
सनत कुमार इन्द्र
महेन्द्र
राजा श्रेयांस
राजा सोम
मंगल कलश स्थापनकर्ता
भरत चक्रवर्ती
बाहुबली कामदेव
ब्रह्म इन्द्र
ब्रह्मोत्तर इन्द्र
कापिष्ठ इन्द्र
शुक्र इन्द्र
मंडप उद्घाटनकर्ता
महाशुक्र इन्द्र
सहस्रार इन्द्र
आनत इन्द्र
प्राणत इन्द्र
अच्युत इन्द्र
महामंडलेश्वर राजा
आयोजक
अर्हं चातुर्मास समिति जयपुर-2024
परम शिरोमणी संरक्षक
श्री कंवरीलाल जी अशोक कुमार जी सुरेश कुमार जी विमल कुमार जी पाटनी
(आर.के.ग्रुप मदनगंज-किशनगढ़)
संरक्षक
* श्री नन्द किशोर जी प्रमोद जी पहाड़िया
* श्री शीतल जी अनमोल जी कटारिया
श्री आदिनाथ दिगम्बर जैन समिति, मीरा मार्ग, मानसरोवर, जयपुर
अध्यक्ष सुशील पहाड़िया 9928557000
वरिष्ठ उपाध्यक्ष सुनील बैनाड़ा 9829561399
उपाध्यक्ष तेजकरण चौधरी 9828081698
संयुक्त मंत्री मनोज कुमार जैन 9314503618
कोषाध्यक्ष लोकेन्द्र कुमार जैन 9828152143
संगठन मंत्री अशोक कुमार सेठी 9828810828
सांस्कृतिक मंत्री 7665014497
मंत्री राजेन्द्र कुमार सेठी 9314916778
सहयोगी संस्थाएँ
श्री आदिनाथ महिला जागृति समिति, मीरा मार्ग, मानसरोवर, जयपुर
अध्यक्ष - सुशीला सौंका, मंत्री - रश्मि सांगानेरिया, कोषाध्यक्ष - रेणु पाटनी
आदिनाथ युवा मंडल, मीरा मार्ग जयपुर * विद्यासागर पाठशाला, मीरा मार्ग, जयपुर
नोट - बाहर से पधारे हुए अतिथियों के लिए आवास एवं भोजन की समुचित व्यवस्था है।

जयपुर. शाबाश इंडिया। जनता कॉलोनी स्थित महावीर इन्टरनेशनल एसोसिएशन में दीपावली स्नेह मिलन समारोह धूमधाम से मनाया गया। इस अवसर पर कलाकर अंकित पारीक व डॉ. तरूणा पारीक ने रंगारंग प्रस्तुतियां देकर माहौल को रूमानियत प्रदान की। सचिव अनिल जी ने बताया कि कार्यक्रम में जयपुर शहर की बड़ी-बड़ी हस्तियों सहित कई गणमान्य लोग मौजूद रहे व इस कार्यक्रम की सभी ने सराहना की।

तीर्थंकर भगवान के माता-पिता की समाज बन्धुओं ने की गोद भराई

घट यात्रा एवं ध्वजारोहण से होगा पांच दिवसीय पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव का आगाज

जयपुर. शाबाश इंडिया

संत शिरोमणि आचार्य विद्यासागर महामुनिराज के परम प्रभावक शिष्य अर्हं योग प्रणेता मुनि प्रणम्य सागर महाराज ससंघ के सानिध्य में मानसरोवर मीरा मार्ग के श्री आदिनाथ दिगम्बर जैन मंदिर में बुधवार 13 नवम्बर से 17 नवम्बर तक होने वाले पांच दिवसीय श्रीमद् जिनेन्द्र जिनबिम्ब पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महामहोत्सव का घट यात्रा एवं ध्वजारोहण से आगाज होगा। इससे पूर्व मंगलवार 12 नवम्बर को आदिनाथ भवन पर पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव के पात्रों के लिए मेंहदी महोत्सव का विशेष आयोजन किया गया । इस मौके पर बैण्ड बाजों के साथ सभी विशेष पात्र जुलूस के रूप में आदिनाथ भवन पहुचे जहां पर भगवान के माता-पिता की समाज बन्धुओं की ओर से गोद भराई की गई । इन्द्र - इन्द्रणियो के लिए आयोजित संगीतमय मेंहदी महोत्सव में सभी पात्रों के हाथों में महिला मण्डल की सदस्याओं द्वारा मांगलिक मेंहदी लगाई गई। अध्यक्ष सुशील पहाड़िया एवं मंत्री राजेन्द्र सेठी ने बताया कि पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महामहोत्सव की सारी क्रियाएं व कार्यक्रम मानसरोवर के गोखले मार्ग स्थित सैक्टर 9 के सामुदायिक केन्द्र पर विशाल पाण्डाल में होंगे। प्रचार प्रभारी विनोद जैन कोटखावदा के मुताबिक महामहोत्सव के अन्तर्गत बुधवार 13 नवम्बर को घटयात्रा एवं ध्वजारोहण से पंच कल्याणक महोत्सव का आगाज होगा तथा इसी दिन गर्भ कल्याणक की क्रियाएं होगी।

जैन के मुताबिक पं. धीरज शास्त्री के निर्देशन में होने वाले इस महामहोत्सव का ध्वजारोहण समाजश्रेष्ठी नन्द किशोर - शांता देवी, प्रमोद - नीना एवं सुनील - निशा पहाड़िया परिवार करेगा। मंगल कलश की स्थापना डी सी जैन - शकुन जैन, महक - निधि जैन श्यामनगर वाले करेगें। मंडप का उदघाटन समाजश्रेष्ठी शीतल - निर्मला कटारिया करेगें। भगवान के माता-पिता पदम कुमार - शशि जैन, सौधर्म इन्द्र महेश - अनिला बाकलीवाल, कुबेर इन्द्र सुभाष - मीना अजमेरा एवं महायज्ञनायक सुशील - निर्मला पहाड़िया होंगे। श्री जैन के मुताबिक महा महोत्सव में बुधवार को प्रातः 6:30 से देव आज्ञा, गुरु आज्ञा आचार्य निमंत्रण, घट पूजन के बाद मंदिर जी से विशाल घटयात्रा निकलेगी जो विभिन्न मार्गों से होती हुई गोखले मार्ग स्थित कार्यक्रम स्थल पर पहुंचेगी। घटयात्रा में हजारों महिलाएं सिर पर कलश लेकर शामिल होगी। घट यात्रा के कार्यक्रम स्थल पर पहुंचने के बाद ध्वजारोहण, मंडप उदघाटन एवं मंगल कलश स्थापना होगी। तत्पश्चात श्री जी के अभिषेक, पूजन सकलीकरण इंद्र प्रतिष्ठा मंडप प्रतिष्ठा के बाद याग मंडल विधान पूजा होगी। प्रातः 9:00 बजे मुनि प्रणम्य सागर महाराज की मंगल देश ना होगी। दोपहर 12:00 बजे से गर्भ कल्याणक की आंतरिक क्रियाऐं होगी। दोपहर 3:00 बजे माता की गोद भराई का विशाल आयोजन होगा। सायं 4 बजे मुनि श्री का विशेष प्रवचन होगा। सायं 6:00 बजे से आचार्य भक्ति, आरती, सौधर्म इंद्र महाराज का दरबार सहित सांस्कृतिक कार्यक्रम होंगे। वरिष्ठ उपाध्यक्ष सुनील बैनाडा ने बताया कि गुरुवार 14 नवम्बर को तीर्थंकर बालक का जन्म कल्याणक महोत्सव मनाया जाएगा। इस मौके पर अभिषेक, शांतिधारा पूजन के पश्चात प्रातः 7:30 से भगवान के जन्मोत्सव की बधाई, प्रथम दर्शन सचि इन्द्राणी द्वारा नैत्र से प्रभु दर्शन, सौधर्म इन्द्र द्वारा प्रवचन के बाद विशाल जन्म कल्याण शोभायात्रा निकलेगी। शोभा यात्रा विभिन्न मार्गो से होती हुई पाण्डुक शिला पहुंचेगी जहां पर तीर्थंकर बालक का जन्माभिषेक किया जाएगा। सायंकाल 6:00 बजे सौधर्म इन्द्र द्वारा तांडव नृत्य और भगवान का पालना झुलाना, बाल क्रियाओं के आयोजन होंगे। उपाध्यक्ष तेज करण चौधरी ने बताया कि शुक्रवार 15 नवम्बर को तप कल्याणक, शनिवार 16 नवम्बर को ज्ञान कल्याणक मनाया जाएगा।

प्रचार प्रभारी विनोद जैन कोटखावदा ने बताया कि महामहोत्सव में रविवार, 17 नवम्बर को मोक्ष कल्याणक की क्रियाएं होगी। इस मौके पर विश्व शांति महायज्ञ के बाद विशाल शोभायात्रा निकाली जाएगी। नवीन वेदियों में श्री जी को विराजमान किया जाएगा। तत्पश्चात सम्मान एवं आभार समारोह किया जाएगा। इसी दिन दोपहर 1.00 बजे से मुनि प्रणम्य सागर महाराज की पिच्छिका परिवर्तन समारोह होगा।